कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
वर्षः११, अंकः०७ अप्रैल-२०१२, इलाहाबाद

संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल
09935959412

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः	रु0 10/—
वार्षिकः	रु0 110/—
पॉच वर्ष—	रु0 500/—
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/—
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/—

क्यों खिलौना बनी हुई है मुस्लिम महिला २१

आओ आध्यात्मिक रंगों से खेले होली ३०

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग	०४
अपनी बात	०५
मुद्दा	२०
समाज	२४
कविताएं-	२५,२६
अहिन्दी भाषी रचनाकार-	२७
कहानीः मानवताा	२८
साहित्य समाचार-	१६,२४,२६, ३१,३२,३३
पुस्तक समीक्षा-	३४

मन को बस में रखना, कर्म करने पर विश्वास, स्वाध्याय, आस्था निराशा को दूर भगाना है. सफलता की आशा निराशा के अंकुरित वृक्ष को निर्मूल करते हैं.

++++++++++++++++++++++++

प्रेम कल्प कारक है अतएव इसके सहवास में दुर्जन, सज्जन, जंगली, सभ्य, क्रूर, अक्रूर बन जाते हैं. प्रेम की छाया में सदा आनन्द, निश्कलुशता का बास होता है, जिसने इसके पुनीत प्रवाह में स्नान कर लिया वह सदा के लिए पवित्र हो गया.

++++++++++++++++++++++++

जिसके प्रति प्रेम किया जाता है, उसका स्मरण, मनन, गुणानुवाद करना निश्चित है. उसमें तन्मय होकर आत्म बिस्मृत हो जाना एवम् एकाकार हो जाना इसकी पराकाष्ठा है. सांसारिकता, बन्धन उसको नहीं बांध सकते हैं, उसके समक्ष तो केवल उसका सर्वस्व प्रेम पात्र ही होता है.

++++++++++++++++++++++++

श्रृंगार के बिना रुप, शरीर के बिना आत्मा के समान है जो परिलक्षित नहीं होती है. रुप प्रकृति की देन है, किन्तु श्रृंगार कला की कुदरत है.

वर्तमान में बिना रुप का श्रृंगार अधिकांश दिखाई पड़ता है न उसमें कोई अस्तित्व है और न प्रगाढ़ता. बाहय आडम्बर का यह चोंगा केवल चकाचौध मात्र का दृश्य उपस्थित करता है, जिसमें न मोहकता है न सुन्दरता.

++++++++++++++++++++++++

रूप और श्रृंगार दोनों नश्वर है. मानव को इस लक्ष्य को समझकर इस संसार के दिखावे में केन्द्रित नहीं होना चाहिए. इन दोनों के अलग गुण की पहचान करना चाहिए, गुणों में रीझना चाहिए.

++++++++++++++++++++++++

चिता जल रही है, चिता में लेटे मानव की चिन्ताएं जल रही है, जीर्ण शरीर का उद्धार हो रहा है. और इधर जन समुदाय में इस भौतिक संसार के प्रति विराग, अनास्था, क्षण भंगुरता का बोध हो रहा है.

++++++++++++++++++++++++

सारी आशाओं, कल्पनाओं, निराशाओं, वेदनाओं का साकार महल सामने ढेर सी लकड़ियो के मध्य जल रहा है. कैसी विधि की विडम्बना है? कैसा उसका खेल है? कुछ समझ में नहीं आता.

✍ **दाऊजी**

अदाब अर्ज़ है

सबको अपना जानिये, करो सभी से प्यार।
अखिल चराचर सहित यह वसुधा, घर परिवार।।

आज हमारे देश में, हालत बड़ी विचित्र।
बिन भाषा हम लोग रहे, ज्यों गूंगा चल चित्र।।

आजादी के बाद भी, मिला नहीं स्वातन्त्र।
भोग रहे हम आज भी, भाषा का परतंत्र।।

किसे विरोधी मान लें, किसको मानें मीत।
आतंकवादी घात से, सब रहते भयभीत।।

पर पीड़ा निज स्वार्थवश, कभी न करिये आप।
यहीं उसे सब भोगना, जैसे जिसके पाप।।

प्रतिभा पर होते सभी, न्यौछावर खुद आप।
बिना बुलाये दीप के, जरें पतंगे ताप।।

नेताजी के राज में, चमचे खायें खीर।
नेताजी नभचर हुए, जनता हुई फकीर।।

साम-दाम-दंड-भेद से, जनमत लिया जुटाय।
जनता करती चाकरी, मंत्री मौज उड़ाय।।

✍ पं० महेश बोहरे,
शीतलामाता गली, राधौगढ़-२६, गुना, म.प्र.

जरुरत है शिक्षा विभाग के भ्रष्टाचार को दूर करने की

परीक्षाओं का दौर आरंभ हो गया है. जैसे ही परीक्षाएं प्रारम्भ होने को होती है नकल करने व कराने वालों का दिमाग नित नये-नये रास्ते ढूंढने में लग जाता हैं. सरकार व परीक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष खासकर बोर्ड परीक्षाओं में नकल रोकने के लिए नये-नये उपाय किए जाते है. लेकिन नकल माफियाओं के आगे सारे नियम कानून असफल साबित होते हैं. इसका मूल कारण है कि आम जनता को दिखाने के लिए तो नकल रोकने के उपाय किए जाते है लेकिन नियम बनाने वाले ही नियम की झोल को नकल माफियाओं को बताकर उसका तोड़ निकालने के उपाय भी बताते हैं. महज कुछ पैसों के लिए बच्चों के भविष्य के साथ खिलावाड़ किया जाता है. वर्तमान दौर में नकल माफियाओं की तूती बोलती हैं. नकल माफिया इतने कारगर व सफल है कि उनका बोर्ड परीक्षाओं से ही पूरे साल का खर्चा चलता है और ऐशो आराम के साथ सुख-साधन उपलब्ध हो जाते हैं. इसमें अच्छे बच्चे जो नकल नहीं करना चाहते वो भी पिसते हैं. कारण प्रायोगिक परिक्षाओं में स्कूल प्रबंधन व नकल माफियाओं का महत्वपूर्ण योगदान. गृह परीक्षाओं के नंबरों का मूल अंक पत्र में जुड़ना. अधिकांश स्कूलों में उनकी पूरी कमाई का ७० से ८० प्रतिशत आय का योगदान १०वीं व १२वीं के छात्रों की वसूली का होता है. वे सत्र प्रारंभ होते ही बच्चों को पकड़ना चालू कर देते है इस निश्चितता के साथ की उन्हें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करा दिया जाएगा. वसूली अभियान चालू हो जाता है. परीक्षाओं के खत्म होते होते प्रत्येक छात्र से कम से कम पांच हजार रुपये से लेकर पच्चीस हजार रुपये तक वसूले जाते हैं. इसके लिए बोर्ड आफिसों से मनमाफिक परीक्षा केन्द्रों को जुगाड़ लगाया जाता है. फिर प्रायोगिक परीक्षाओं में परीक्षक को मूर्ति बनाकर रख लेते हैं. अपने हिसाब से अंक अपने मुद्रा प्रदत्त छात्रों को दिलवाते हैं. फिर लिखित परीक्षाओं में बोर्ड पर लिखकर, पेपर का उत्तरीत कागज देकर, दूसरे छात्र/छात्राओं को बैठाकर कापियां लिखवायी जाती है. जो छात्र पैसे नहीं देते उन्हें विभिन्न माध्यमों से प्रताड़ित किया जाता है ताकि वे पैसा देने को मजबूर हों. जो छात्र किन्हीं कारणों वश पैसा नहीं देते वे अपने हिसाब से कापियों में लिख भी नहीं सकते.

जब हमारे देश के कल के भविष्य बच्चों के साथ ऐसा खिलवाड़ किया जाता है तो हम यह कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि कल को ये बच्चें ईमानदार अधिकारी/डॉक्टर/इंजीनियर व नेता बनेंगें. इसके लिए जरुरी है कि सबसे पहले हम शिक्षा विभाग को भ्रष्टाचार से मुक्त करें. अगर हम शिक्षा विभाग को नकल माफियाओं की नकेल से, भ्रष्टाचार से मुक्त करवा लें तो भ्रष्टाचार को पचास प्रतिशत तक खत्म किया जा सकता है. इसके लिए बच्चों के अभिभावक नकल के लिए पैसे किसी भी कीमत पर न दें. जो स्कूल/कॉलेज नकल के लिए पैसे देने को मजबूर करें उनके खिलाफ एकजुट होकर लड़ें. जब हम जड़ रूपी छात्रों में ही भ्रष्टाचार का बीज बो रहे हैं, भ्रष्टाचार का खाद-पानी दे रहे हैं तो हम कैसे यह उम्मीद कर सकते हैं कि बड़ा होकर पौधा रूपी नागरिक स्वच्छ, ईमानदार हवा व फल देगा. इन पौधों द्वारा प्रदत्त हवा व पानी भी तो भ्रष्टाचार से ओत-प्रोत होगा. ऐसा नहीं है कि शिक्षा में भ्रष्टाचार केवल बोर्ड की परीक्षाओं में ही हैं. यह भ्रष्टाचार स्नातक, परास्नातक, डॉक्ट्रेट, तकनीकि शिक्षा केन्द्रों में भी जम कर चल रहा है. बस जरुरत है अभिभावकों को जागरुक करने के साथ दृढ़ संकल्प करने की. ताकि वे इस पर रोक लगा सकें. आईये हम सब मिलकर सबसे पहले शिक्षा विभाग से भ्रष्टाचार को दूर करने का संकल्प लें।

श्रीमती जया द्विवेदी
प्रबंध संपादक

अंग्रेजी षडयन्त्र है-संसदीय लोकतंत्र

✍साध्वी रेणु,
हिमाचल प्रदेश,मो०९४५४०१४७८४

ब्रिटिश संसदीय प्रणाली बांझ एवं संसद वेश्या. आईए जानें इसका रहस्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा विश्व विजय अभियान की लूट से अर्जित धन, प्राकृतिक सम्पदा एवं श्रम की नींव पर खड़ा पूँजीपतियों द्वारा संचालित ढॉचा जिसे बाद में विश्व पर शासन करने के लिए पूँजी के खेल पर संचालित संसदीय लोकतन्त्र का जामा पहनाया गया है. मानवता को निगल जाने के लिए उतावला हो रहा है. उसका षड्यन्त्र खुल चुका है. आओ इस षड्यंत्रकारी रहस्य का उद्घाटन कर मानवता को इस राक्षस से मुक्ति दिलायें. इस सृष्टि का आधार कृषि है. इस समय कृषि को मिटाने की समस्त योजनाएं चल रही हैं. कृषि से जो अन्न उगता है, उससे समस्त प्राणी जगत का पेट भरता है. फिर कौन सा मानव कृषि को मिटाना चाहता है, क्या उसके शरीर का पोषण अन्न से नहीं होता? यह ज्वलंत प्रश्न है.

कृषि का ''मॉं'' रूप एवं भारत है इसका पुजारीः-इसका उत्तर जानने से पूर्व हमें कृषि के महत्व को समझना होगा. कृषि से केवल पेट ही नहीं भरता. कृषि आधारित व्यवस्था से समस्त समाज का संचालन ''समता'' के आधार पर होता है. इससे समस्त समाज खुशहाल, सम्पन्न एवं सुसंस्कृत होता है. कृषि के स्वभाव में देना है. भारत कृषि प्रधान देश है, प्रकृति का पुजारी है, समस्त प्राणी जगत की उपयोगिता का ज्ञान रखता है, सब पर दया करता है. इस सुन्दर मन के कारण इस देश को ''मॉं'' कहा गया है. कृषि के कारण ही मानव जीवन में रचनात्मकता आई है एवं भारत ने रचनात्मकता को परिष्कृत किया है।. तभी चेतना का विकास संभव हो पाया है. कृषि प्रधान समाज में शिक्षा कभी जीविकोपार्जन का माध्यम न बन सकी. शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य ''आत्मबोध'' हुआ करता था.

पूंजीवाद कृषि का विरोधी क्योंः-पूंजीवाद के स्वभाव में छीना छपटी है. जैसे रोज़ सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी को मार कर एक ही बार समस्त अण्डे प्राप्त कर लो. इसके स्वभाव में क्रूरता के साथ ''जड़ता'' (मूर्खता) भी है. यूरोप के हाथ में सृष्टि का संचालन आने का कारण ही लूट अर्थात् पूंजीवाद है. कृषि एवं पूंजीवाद एक साथ नहीं चल सकते क्योंकि एक का स्वभाव देना एवं दूसरे का लूटना है. पूंजीवाद से जो औद्योगीकरण होता है, वह पर्यावरण को दूषित करता है. कृषि से जो औद्योगीकरण होता है, वह पर्यावरण को पुष्ट करता है. कारण? कृषि आधारित औद्योगीकरण का आधार गाय, प्रकृति संरक्षण एवं पशु-पालन है जबकि पूंजीवाद के औद्योगीकरण का आधार ''लूट'' है. पूंजीवाद यूरोप है, कृषि भारत है. इसी कारण जब से कृषि-किसान-गाय-गांव मिटाने की योजनाएं मैकाले की शिक्षा पद्धति के माध्यम से बनीं, तब से भारत मिटना शुरु हो गया. पूंजीवाद के औद्योगीकरण ने जिसे विकास का नाम दिया, आज उसकी विनाशलीला सामने है. इस युग की सबसे बड़ी विनाशलीला जापान में हुई जो पूंजीवाद की देन है.

इस समय सबसे बड़े धनपति का राज्य कैसे चल रहा हैः-यूरोप के धनपति को आधार बना कर दूसरे देशों को लूटना शुरु किया. इस लूट में प्रत्येक देश का पूंजीपति शामिल है. इन पूंजीपतियों का एक समूह है. जब सत्ता का नियन्त्रण व्यक्ति के हाथ में होता है, तो पैसे के बल पर होता है. कृषि प्रधान राज्य में सत्ता जैसी कोई ताकत नहीं होती क्योंकि स्वावलम्बन होता है. प्रत्येक को श्रम करना पड़ता है. इसमें कर्तव्य आधारित व्यवस्था होती है, उसमें से अधिकार स्वयं जागृत होता है. इस व्यवस्था में कोई नौकर नहीं होता. लेकिन जब पूंजीवाद होता है, तब शक्ति प्रदर्शन होता है क्योंकि इसका मूलमन्त्र लूट है. इसमें अधिकार है. अधिकार के लिए आतंक है. आतंक के लिए भय निर्मित करना पड़ता है. उसका संचालन सबसे बड़ा लुटेरा अर्थात् पूंजीपति करता है. इसमें किसी छोटे देश या बड़े देश के पूंजीपति के हाथ में सत्ता नहीं होती. यहॉं देश की ताकत का नहीं, पैसे की ताकत का खेल चलता है. इन पूंजीपतियों का कोई देश नहीं होता. इनका कोई ईमान नहीं होता. सिर्फ पैसा भगवान होता है. आप बड़े-बड़े पूंजीपतियों की सूची बनाइए एवं उनका सम्बन्ध किससे है, आपको समझ आने लगेगा. इस समय पूरे विश्व में पूंजीपतियों का जो एक समूह है, पूरे विश्व का शासन इनके माध्यम से चल रहा है. इसी कारण पूरे संसार में पैसे के लिए हायतौबा मची है.

पूंजीपतियों का समूह अपनी योजना संचालन के लिए तलाश करता है -ताकतवर देश द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप का राजा अमेरिका बना. इससे पहले ब्रिटेन के माध्यम से पूंजीवाद अर्थात् लूट चल रही थी. अब अमेरिका के माध्यम से चल रही है. पूंजीपतियों के सत्ता संचालन के कारण ही एक देश ऐसा बनाया जाता है, जो सबसे ताकतवर हो अर्थात् लुटेरा हो. जिसकी गुण्डागर्दी के सामने किसी दूसरे देश की एक न चले. ब्रिटेन ने दूसरे देशों

को लूटने के लिए जिस शासनतन्त्र को खोजा, वह संसदीय चुनाव प्रणाली है, जिसे लोकतन्त्र के नाम से जाना गया. आज अमेरिका पूरी दुनिया में संसदीय चुनाव प्रणाली के लिए लालायित है. लोकतन्त्र की कड़िया मिल कर जिस सरकार का निर्माण करती हैं, उसका आधार बना लूट के धन से उपजा पूँजीवाद माफिया (बाजार), माफिया से लोकतन्त्र, लोकतन्त्र के लिए सरकार और सरकार के लिए चुनाव का नाटक और चुनावों में पार्टियों के माध्यम से धन का खेल अर्थात् दुनिया धनपतियों की मुट्ठी में. इस भयानक सुनियोजित षड्यन्त्र को तोड़ने का एकमात्र उपाय है शून्य खर्च वाली चुनाव प्रणाली. जिससे समाज या राष्ट्र निर्माण में हर साधारण व्यक्ति की भूमिका सुनिश्चित की जा सके.

सरकार क्या है:-इन धनपतियों के इशारों पर जो सत्ता संम्भालेंगें उसे सरकार कहते हैं. ताकतवर देश को ''पूंजीपतियों के समूह'' द्वारा जो निर्देश मिलें, उसका यथावत पालन करे. पूंजीपतियों का समूह स्वयं को परदे में रखने के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं बनाता है, संस्थाएं बनाता है, पैसा झोंकता है. ऐसा दिखाया जाता है कि इन संस्थाओं का सबसे ताकतवर देश पर नियन्त्रण है, कड़ी दृष्टि है. उदाहरण के तौर पर यूएनओ, डब्ल्यूटीओ, डब्ल्यूएचओ. डब्ल्यूबी, जीएटीआई, यूनिसेफ, एनजीओ इत्यादि. सरकारों को इन संस्स्थाओं की नीतियॉं ऐसे मानना होता हैं, जैसे ये भगवान हों. इनके माध्यम से किसी भी देश को लूटने के लिए सरकार के नुमाइंदों को बेहिसाब धन मिलता है. सरकारों से जो योजनाएं बनवायी जाती हैं, वे देशकाल की आर्थिक स्थिति, भूगोल इत्यादि को देख कर नहीं, केवल पूंजीपतियों के हित साधने के लिए. सरकारों के संचालक इन पूँजीपतियों के नुमाइंदे होते हैं.

भारत की तथाकथित आजादी का लक्ष्य कृषि को समाप्त करना एवं पूंजीवाद को पुष्ट करनाः-
भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई कांग्रेस के माध्यम से लड़ी गई. कांग्रेस एक विदेशी मस्तिष्क ए.ओ.ह्यूम की रचना है. यह विदेशी कम्पनी अर्थात् कांग्रेस ने भारत के पूरे जोश को अपने घड़े में भर लिया, बाद में उसे गन्दे नाले में फेंक दिया. कैसे? वास्तव में आजादी को एक नाटक की तरह खेला गया. इसी कारण आजादी के बाद राज्य का संचालन ब्रिटिश संसदीय चुनाव प्रणाली से हुआ. ब्रिटिश सत्ता के द्वारा बनाया गया संविधान, ब्रिटेन के बनाए गए कपटी कानून, आजाद भारत को तड़पा रहे हैं. इस प्रकार इन हमलावरों ने भारत के साधनों को लूटा. आजाद भारत की ''सरकार'' ने भारत के समस्त संसाधनों को पूंजीपतियों के हाथ बेच दिया. इसीलिए ''आजादी'' के बाद आज किसान भूखा, नंगा, दीनहीन एवं लाचार खड़ा है. ''आजादी-एक धोखा'' का यही लक्ष्य था, जो पूरा हो गया. वह बाजार के हाथों बुरी तरह पिस रहा है. ऊसर भूमि, नपुसंक बीज, फसल की दलाली एवं कर्ज ने उन्हें खून के आंसू रोने को विवश कर दिया है. अब सरकार उनसे जबरदस्ती भूमि छीन कर पूंजीपतियों के हवाले कर रही है एवं पूंजीपति सरकार के नुमाइंदों को मोटा कमीशन देकर अपनी ''सेज़'' सजा रहे हैं. सरकार बड़े-बड़े उद्योगों को भारी अनुदान देती है एवं किसानों को करों के बोझ से जिन्दा मारती है.

आप बताइए जब भारत में ''सरकार'' नाम की वस्तु नहीं थी, क्या कभी भारत में लाखों की संख्या में गाएं कटी? विश्व जो पर्यावरण की स्थिति आज है, क्या कभी किसी भी अत्याचारी राजा के समय हुई? क्रान्ति से पहले पूंजीवाद की जड़ समझें कौन करेगा क्रान्ति? वही, जिसे सबसे अधिक सताया गया है. वही, जिसे पूंजीवाद छू न पाया हो. किसान को पूंजीवाद कभी छू नहीं सकता. पूंजीवाद का ज़हर उसे सबसे अधिक सता सकता है, मार नहीं सकता. पूंजीवाद ने बाकी सब को मार दिया है. पैसे की ताकत ने सबको अपने शिकंजे में जकड़ लिया है.

किसान करेगा क्रान्ति! लेकिन कैसे? हमें पूंजीवाद की जड़ को तलाशना होगा. पूंजीवाद की जड़ है लोकतन्त्र. लोकतन्त्र टिका है करोड़ो के खर्च पर टिकी संसंदीय चुनाव प्रणाली पर हमें इस चुनाव प्रणाली को भस्म करना है.

करो महाक्रान्ति का शंखनाद एवं जन्म दो नये भारत को. हे किसान भाईयो! क्रान्ति का प्रथम शंखनाद तुम्हें करना है. तुम्हारे जनजागरण से पूरा छात्रवर्ग इस महाक्रान्ति में कूद पड़ेगा क्योंकि पूंजीवाद ने उस वर्ग को केवल उदरपूर्ति के लिए गलाकाट प्रतियोगिताओं, महंगी शिक्षा से उनके अभिभावकों पर बढ़ता कर्ज़, १८ घण्टे की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नौकरी(गुलामी) एवं बेरोज़गारी ने उन्हें मानसिक बीमार कर दिया है. वह भी तुम्हारी तरह आत्महत्या करने पर विवश है. वह सुप्तावस्था में है. उसे केवल किसान क्रान्ति ही जगा सकती है.

पूरा विश्व पूंजीवाद के कारण विनाश की कगार पर खड़ा है. धरती की रक्षा के लिए विधाता ''नए भारत'' को जन्म देने वाले के साथ है. इस क्रान्ति का श्रेय किसान को ही मिलेगा. भारत का किसान पुनः राजा बनेगा. यही कलयुग की कालिमा को नष्ट करके सतयुग के सूर्य को प्रकट करेगा. आइए, हम सब मिल कर उद्घोष करें ''मैं दूंगा नया भारत'' एवं विकल्प भारत योजना की स्थापना का संकल्प लें. पूरे देश में जनजागृति का महाअभियान चलाएं एवं सम्पूर्ण देश में नई आशा का दीप जलाए.

मुद्दा

स्त्री के सन्दर्भ में धर्म-नई व्याख्या हो

✍ चमेली जुगरान
पतिःश्री रमेश चन्द्र जुगरान (विदेश सेवा)
शिक्षाःस्नातक, डिप्लोमा इन सोशल सर्विसेज, डिप्लोमा इन पेन्टिंग, टेक्सटाईल डिजाइन सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा इन सितार वादन,
भाषाएः नेपाली, हिन्दी, बागला, स्वीडिश, अंग्रेजी
पुस्तकेंः ४ कहानी संग्रह, २ काव्य संग्रह, २ निबंध संकलन, १ यात्रा संस्मरण,
सम्पर्कः डी-३१, आई.एफ.एस. अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, फेस-१, दिल्ली-६१

ऊपरी तौर पर हर धर्म यही कहता है कि हर इंसान बराबर है. यहां तक कि जीव जन्तु और पशु पक्षी भी न्याय और आदर के हक़दार हैं. लेकिन वास्तविकता कुछ और है. धर्म ने दूरिया बढ़ाई है. घर और समाज में जो लोग ऊंचे ओहदों पर बैठे हुए हैं उनको धर्म ने ज्यादा छूट और अधिकार दिए हैं. रीति रिवाजों में उन्हीं को ज्यादा फायदा पहुंचाया गया है.

धार्मिक ग्रंथ स्त्रियों के सन्दर्भ में कैसी भाषा बोलते हैं. स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में निम्न स्तर पर रखा जाता हैं. समाज में हर क्षेत्र में जो गैर बराबरी है वह धर्म में भी दिखती है. युगों पुरानी धार्मिक कहांनिया आज भी उदाहरण के तौर पर दुहराई जाती है. उन्हीं के आधार पर स्त्री का चरित्र और परिश्रम आंका जाता हैं.

सती सावित्री और द्रौपदी की मिसाल देकर एक कर्तव्य परायण और धर्मनिष्ठ महिला की छवि आंकी जाती है. जिसने जरा भी लक्ष्मण रेखा को पार किया, उसे आवारा, बदचलन और तेज दिमाग कहा जाता हैं.

स्वयं स्त्री भीा अपनी परिभाषा यहीं समझने लगी है. जो स्त्री खानदान की इज्जत रखें, सास-ससुर की सेवा करे, पति और बड़ों का ख्याल रखें वही सफल गृहिणी है. पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना ही सर्वप्रथम कर्तव्य है. पहले पिता फिर पति और बाद में पुत्र के संरक्षण में रहना इनकी नियति है. शास्त्रों में भी यही लिखा है. यहां तक कि ढोल, गंवार, शुद्र, पशु नारी सब ताड़न के अधिकारी कहा गया है. बचपन से ही ऐसा सुनते हुए उनके अन्दर हीन भावना घर कर लेती है.

अच्छी औरत परिवार के दायरे में ही सम्भव है. लड़कियों से कहा जाता है-ठीक से पढ़ो, नहीं तो तुम्हारी शादी कर देंगें. लेकिन भाईयों को ऐसी धमकियां नहीं मिलती.

इतना सब होते हुए भी महिलाओं के लिए धर्म महत्वपूर्ण क्यों बना हुआ हैं. वे व्रत ले रही है, सत्संग, जागरण में जा रही है. पति, पुत्र और परिवार के लिए रात भर गंगा किनारे एक टांग पर खड़ी है दीया जलाये! आदमी चांद पर चला गया लेकिन वे आज भी चांद को देखकर व्रत तोड़ती है. परिवार की सुरक्षा का जिम्मा केवल स्त्री पर ही क्यों? पुरुष क्यों नहीं लेते व्रत पत्नी और सन्तान के लिए.

धार्मिक परम्पराएं स्त्री को अर्द्धांगिनी मानती है तो वो जीवन भर आधी ही बनी रहती है. धर्म-कर्म के मामले में पुरुष आगे हैं. वह पुजारी है मंत्र पढ़ता है, शादी-व्याह, मुंडन, क्रिया कर्म करवाता है. यह अधिकार स्त्री को नहीं है. जिस घर में पति, पुत्र या पुरुष रिश्तेदार न हों तो दूर के किसी सम्बन्धी को बुलाया जाता है ताकि मृत आत्मा को स्वर्ग व शान्ति मिले. दिलचस्प बात तो यह है कि स्त्रियों के सहारे ही धर्म जीवित है. सभी आयोजकों के पीछे स्त्री-शक्ति मौजूद हैं. दूर्गा पूजा का समस्त आयोजन महिलाओं के हाथों में ही होता है. चन्दा वसूलना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मंच व्यवस्था, साज-सज्जा, पुष्पांजली आदि सब वहीं करती है. पुरुष आनन्द विभोर हो प्रसाद ग्रहण करते हैं.

जन्म, नामकरण, पाणिग्रहण आदि के लिए पूजा सामग्री, मास, तिथि का हिसाब भी महिलाएं ही रखती है. पश्चिमी देशों में महिलाओं ने अनेक संघर्ष किए हैं. पुरुष पादरी ही क्यों हो? स्त्री क्यों नहीं? कहीं-कहीं महिलाएं यह काम कर भी रही हैं. एक प्रकार से महिलाओं ने ईश्वर व धर्म से विशेष नाता जोड़ रखा है. अपने सुख दुःख की बातें वे ईश्वर से करती हैं. कीर्तन, सत्संग के बहाने सखी सहेलियों के साथ तीरथ यात्रा पर निकल सकती है. इस बहाने घर परिवार से भी इज़ाजत मिल जाती है. भले काम के लिए कोई नहीं रोकता. कुछ समय के लिए चूल्हें-चौके से छुट्टी मिल जाती है.

प्रश्न उठता है कि इस प्रकार आजादी पाने के लिए उन्हें धर्म का सहारा क्यों लेना पड़ता है. धर्म ने उन्हें कमजोर बनाया और धर्म ही उनकी शक्ति भी बना.

धार्मिक कट्टरता के दौर में बन्दिशे भी उन्हीं पर लगती है. जिस तरह अफगानिस्तान, ईरान में हुआ. जब जब धर्म और खानदान की इज्जत को खतरा महसूस हुआ तब-तब स्त्री को दांव पर चढ़ाया गया. धार्मिक, परम्पराओं और संस्थानों के भीतर बदलाव आने चाहिए. धर्म की नई परिभाषा स्त्री के संदर्भ में हो ताकि वो आत्म विश्वास के साथ जी सके.

✍डॉ० सुमि ओम शर्मा 'तापसी'
ओम शर्मा हाउस, २४, कार मिचेल रोड, मुम्बई-४०००२६

भ्रष्टाचार का वाईरस

मानव मन इतना स्नेह शून्य कैसे हो गया? कुछ संवेदनशील मनुष्य भी पैसे की चमक दमक से अन्धे हो जीवित-मृत अवस्था में पहुंच गये हैं. मृतक समान इसलिये कि चारों तरफ का हाहाकार भी उन्हें कुछ करने को विवश नहीं कर पाता है...अपने पास ज़रुरत से ज्यादा है और किसी के पास ज़रुरत भर भी नहीं. ये कैसा मानव समाज हमने मिलजुल कर बनायाा है. काश! जो कर सकते हैं वो सचेत हो एक नया ढांचा बनायें जिसमें हर भारतवासी के सिर पर छत हो और कोई भी भूखा ना सोये. जैसै सूरज, चन्द्रमा, वायु वर्षा, सागर, धरती वनस्पति, और परिन्दे कोई भेदभाव नहीं करते वैसे ही मनुष्य-मन भी विशाल बने, समस्त सृष्टि को अपना परिवार समझे, तभी ये पृथ्वी और पृथ्वीवासी स्वर्णयुग की ओर कदम बढ़ायेंगें.

हर मानव अनकट डाईमन्ड है, उसे वो जौहरी की नज़र चाहिये जो उसे तराश अनमोल रत्न बना दे. अपने जीवन में यदि दस करोड़ भारतीय भी ये शपथ ले लें कि हमें अपने जीवन काल में जब भी सुयोग मिले, पांच लोगों को ग़रीबी, अशिक्षा, हिंसात्मक प्रवृत्ति, नशा, झूठ फरेब और नकारात्मक सोच की दलदल से निकाल उसे सही दिशा दिखानी है... थामना है कस कर उसका हाथ और साथ-साथ सहारा दे उसे सही दिशा दिखानी है. थामना है हाथ और साथ देकर उसे एक अच्छा इन्सान बनाना है जो अपने परिवार का सहारा बन सके, अच्छा बेटा, अच्छा भाई, अच्छा पति और एक ज़िम्मेदार पिता बन, राष्ट्र के सुदृढ़ नींव का पत्थर बनने का गौरव प्राप्त करें. ऐसे अच्छे समझदार १० करोड़ नागरिक दूसरों के पथ प्रदर्शक और शाईनिंग इंण्डिया के तारे बन जायेंगें.

देश को खोखला बनाने की सबसे बड़ी दीमक लग चुकी है. ये है भ्रष्टाचार का वाईरस जो एड्स जैसी लाईलाज बिमारी से भी ज़्यादा खतरनाक है. एड्स का जीवाणु शरीर के सफेद कणों को नष्ट करके मनुष्य की प्रतिरोधक शक्ति कम करके हर तरह के विषैले जीवाणुओं और किटाणुओं को आमन्त्रित करता है लेकिन भ्रष्टाचार का जीवाणु तो मन को जर्जर कर देता है...विचार करने लायक ही नहीं छोड़ता, विवेक बुद्धि पर लोभवृत्ति छाने से मनुष्य को समूल नष्ट कर देता हैं.

हमारे देशवासियों के मन संक्रमित हो चुके हैं. यदि ये रोग देश की रक्षा करने वाले वीरों को लग गया तो हम कहीं के ना रहेंगें. रीढ़ की हड्डी टूटने से जैसे मनुष्य विकलांग और असहाय हो जाता है ऐसे ही हम भारतीय जल्दी ही विदेशी ताकतों के गुलाम बन जायेंगें.

आज की मार्डन माताएं यदि बच्चों में सदगुण का बीज़ रोपित नहीं कर पाती हैं तो ये कार्य स्कूल के गुरुजनों को उठाना है. पाठ्यक्रम में भ्रष्टाचार के ख़िलाफ लड़ने की नीति अपनानी है. बच्चों की जड़ो में ही इसके प्रति नफ़रत को सींचना है ताकि बच्चे अपने पिता को कह सके 'हमें हराम की कमाई की रोटी नहीं चाहिये.' इससे नयी पौध देश का सही मायने में 'नव निर्माण' करेगी.

(लेखिका की पुस्तक मातृछाया से साभार)

हिन्दी विषय वाले सम्मानित होंगें

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नमवब्र २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखें:

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
उ.प्र.मो० 09335155949
email: sahityaseva@rediffmail.com

त्योहार

होली

हर भारतीय, चाहे वह देश में हो या परदेश, होली की प्रतीक्षा बड़ी व्यग्रता से करता है. होली के गीत गातीं, मस्ती में खोयी हुई टोली से सम्बन्धित पौराणिक कथाएं भी है. होली के पर्व का प्रचलन, पहले आर्यो में भी था, लेकिन इस त्योहार को अधिकतर पूर्वी भारत में ही मनाया जाता है. नारद पुराण और भविष्य पुराण में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है. प्रहलाद की कहानी के साथ-साथ इसका सम्बंध कृषि से भी है.

डॉ० तारा सिंह
१५०२, १५ वॉ तल, सी, क्वीन हैरिटेज, पामबीच रोड, प्लॉट-६, सेक्टर-१८, सानपाड़ा, नवी मुम्बई-४००७०५

वसंत की रंगता का प्रतीक, होली प्रत्येक साल फाल्गुन महीने की पूर्णमासी को मनाया जाता है. उज्जवल वासंती वातावरण के कारण धरती शीतल-मन्द सुगंध से सुगन्धित हो, धरती से आसमां तक को गमकाती हुई, एक उद्यान सी लगती है. प्रकृति के इन उमंगो, नयी तरंगों से मानव प्राण में नया रुधिर दौड़ने लगता है. आम के पेड़ों में मंजर भर आता है, जो वातावरण को चंदन वन में बदल देता है.

हर भारतीय, चाहे वह देश में हो या देश के बाहर परदेश में, होली की प्रतीक्षा बड़ी व्यग्रता से करता है. लोग गांव से शहर तक होली के कई दिन पहले से ही तैयारियों में जुट जाते हैं. ढ़ोलक, झांझ, करतास व मजीरों के संगीत में मस्त, गली-गली में घूमती टोलियां फ़ाग व होली के गीत गातीं, मस्ती में खो जाती हैं. होली में केवल यौवन की फुहारें होती है. इस त्योहार का केवल यही एक पक्ष है, ऐसा नहीं हैं. इससे जुड़ी ऐतिहासिक और पौराणिक कथाएं हैः जिसके कारण इस त्योहार को हिन्दू समाज में धार्मिक दृष्टि से भी, बहुत मान्यता मिली है.

इतिहासकारों का कहना है कि होली के पर्व का प्रचलन, पहले आर्यो में भी था, लेकिन इस त्योहार को अधिकतर पूर्वी भारत में ही मनाया जाता है. इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है. नारद पुराण और भविष्य पुरण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रन्थों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है. आज भी विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से ३०० वर्ष पुराने एक अभिलेख में इसका उल्लेख किय गया है.

सुप्रसिद्ध मुस्लिम पर्यटक 'अलबरुनी' ने अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होली के त्योहार के बारे में लिखा है, भारत में हिन्दू के साथ मुसलमान भी इस पर्व को मनाते थे. इसके ऐतिहासिक प्रमाण में उन्होंने लिखा है, अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहांगीर का नूरजहां के साथ (अलवर के संग्रहालय में लगे एक चित्र से) यह साबित होता है, वहां इन्हें एक दूजे के साथ होली खेलते दिखाया गया है. अंतिम मुगल बादशाह, बहादुर शाह ज़फ़र के बारे में भी यह बात प्रसिद्ध है कि होली के दिन उनके दरवार के मंत्री, उन्हें रंग लगाने जाते थे.

हिन्दुओं के इस प्राचीन त्योहार, होली से अनेक कथाएं जुड़ी हुई हैं. इनमें सबसे प्रसिद्ध है, प्रहलाद की कहानी. प्रहलाद, राजा हिरण्यकश्यप का पुत्र था. पिता कट्टर नास्तिक थे, तो पुत्र कट्टर आस्तिक. कहते हैं, उस समय किसी की मजाल नहीं थी, कि ईश्वर भक्ति करे. हिरण्यकश्यप को भगवान का दर्जा मिला हुआ था. पुत्र प्रहलाद को भी उन्होंने बहुत समझाया कि तुम मेरे नाम की पूजा करो, मैं ही तुम्हारा भगवान हूं. अन्यथा, इसका दंड बहुत बुरा होगा, लेकिन प्रहलाद ने पिता के आदेश को हर बार नकार दिया. उसकी इस उद्दंडता से क्रुध होकर, पिता ने उसे अनेक कठोर दंड दिये. बावजूद प्रहलाद ने भक्ति की राह नहीं छोड़ी. हिरण्यकश्यप की बहन, होलिका जिसको यह वरदान प्राप्त था कि उसे आग भस्म नहीं कर सकती. हिरण्यकश्यप ने आदेश दिया, होलिका बड़े भाई का हुक्म तामिल करती हुई प्रहलाद को गोद में लेकर धधकती आग में बैठ गई. होलिका जल गई, लेकिन प्रहलाद को आग ने छूआ तक नहीं. इसी ईश्वर भक्त की याद में इस दिन होलिका दहन होता है, इसलिये इसका नाम 'होली' पड़ा. लोग इसी पौराणिक कथन के आधार पर होली जलाते है, और भक्त प्रहलाद के विजय के लिये रंग खेलते हैं.

इस पर्व का सम्बंध कृषि से भी है, लोग उस शुभ दिन की याद में मनाते हैं. जब मानव ने धरती पर पहली बार अन्न उगा बालियों को आग पर पकाकर खाया था, होली का अर्थ, 'होरा' से भी जोड़कर देखते हैं (बिहार में ओढ़ा) कच्चे चने, गेहूं के दाने को आग में भूनकर, इस दिन लोग खाते हैं. किसान अपने खेत का पहला अन्न, अग्नि को समर्पित किये बिना खुद खा ले, ऐसा नहीं होता. अतः यह कहा जाता है कि प्राचीन काल में सामूहिक यज्ञ होता था. इस यज्ञ में पकाये गये अन्न के दाने को लोग प्रसाद के रूप में ग्रहण करते थे. ऐसी अनेक किंबदंती कथाएं है,

इसका कारण जो भी रहा हो, लेकिन आज इसे क्या गरीब, क्या अमीर सभी बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं.

होली के पहले दिन, झंडा गाड़ना होता है, जो किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में गाड़ा जाता है. अग्नि जलाने के लिये लकड़िया या उपले जिसके बीचो-बीच छेद होता है, उसमें मूंज की रस्सी डालकर माला बनाई जाती है. फिर इसमें रात को होलिका दहन के समय इस माला को उसमें झोक दिया जाता है.

होली के दिन, घर-घर में मिठाइयां, पकवान बनते हैं, काजू, भांग और ठंडाई, इस पर्व का विशेष पेय होता है. पर ये कुछ लोगों को ही भातें हैं. इस अवसर पर सरकारी दफ्तरों में छूट्टी घोषित कर दी जाती है, जिससे कि लोग खुलकर, और झूमकर इस पर्व को मना सकें. होली की लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि कुछ संगीत की विशेष शैली का नाम होली है, जिनमें अलग-अलग प्रांतो की अलग-अलग भाषाओं में होली की धार्मिक और ऐतिहासिक गाथाएं छुपी रहती है. जैसे अवध में (राम और सीता के लिए 'होली खेले रघुवीरा अवध में'), राजस्थान के अजमेर में, ख्वाज़ामोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर गाई जाने वाली होली है 'आज रंग है री, मन रंग है, अपने महबूब के घर रंग है री' इसी प्रकार होली से सम्बन्धित क्षेत्रों में गाये जाते हैं.

इस प्रकार होली केवल एक त्योहार नहीं बल्कि अनेकों प्राचीन घटनाओं से जुड़े विश्वासों का साकार, रंगीन रूप भी है होली. इसलिए इस दिन लोग, सारे गिले-शिकवे को भुलाकर, एक दूसरे से गले मिलते हैं. घर-घर जाकर मिठाईयां बांटते हैं. लेकिन कुछ लोग इस अवसर पर शराब पीकर, कीचड़ उछालकर अपनी अश्लीलता का प्रदर्शन करके, इस पवित्र त्योहार के रूप को बिगाड़ देते हैं और जब इंसान खुद नशे में हो तो, वह त्योहार का मजा कैसे ले सकता है. नशा और आनंद, दोनों एक साथ संभव नहीं है. होली का त्योहार हो या अन्य खुशियों का अवसर, नशामुक्त होकर मनाना चाहिये. तभी हमारे त्योहार की पवित्रता, और शालीनता बनी रहेगी, अन्यथा सब

इस संदर्भ में मेरे काव्य संग्रह 'समर्पिता' की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत है-

मिटे धरा से ईर्ष्या, द्वेष, अनाचार, व्यभिचार
जिंदा रहे जगत में, मानव के सुख हेतु
प्रह्लाद का प्रतिरुप बन कर प्रेम, प्रिति और प्यार
बहती रहे, धरा पर नव स्फूर्ति का शीतल बयार
भींगता रहे, अंबर-जमीं, उड़ता रहे लाल-नीला
पीला, हरा, बैंगनी, रंग-बिरंगा गुलाल.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011
कानाफुसीः 09335155949 ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.
अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें
नाम :..
पिता / पति का नाम :...
पता :..
डाकखाना :...जनपद...................................
राज्य :...पिन कोड...................................
दूरभाष / मो0..ईमेलः...

विशेष नियमः
01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / —	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / —	$ 5.00 /
पॉच वर्ष :	रु0 500 / —	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / —	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / —	$ 1500 /

फूलो वाली राजकुमारी

डॉ० राज बुद्धिराजा
टावर नं० २, सेक्टर-६३, ए/१, १०४,
एक्सप्रेस हाईवे, नोएडा-२०१३०४

बहुत पुरानी बात है. एक छोटे से गांव में पति-पत्नी रहा करते थे. उनके साफ़-सुथरे कपड़े और सफ़ेद रेशम से बाल सभी का मन मोह लेते थे. वे बहुत भले आदमी थे. गांव के दुःख में दुःखी और सुख में खुशी से झूम उठते थे.

भले आदमियों को रहने-सहने का आराम कम मिलता है. वे दोनों भी छोटी-सी झोपड़ी में रहा करते थे. आंगन के आधे हिस्से को वे गोबर-मिट्टी से लीप देते थे और आधे में आलू, शकरकंद, मूंगफली और दूसरी सब्जियां उगा दिया करते थे. उन दिनों सब्जियों के बदले फल और फलों के बदले अनाज मिल जाया करता था. पैसे से केवल कपड़े खरीदे जाते थे. इस तरह वे भी अपना गुजारा कर लिया करते थे.

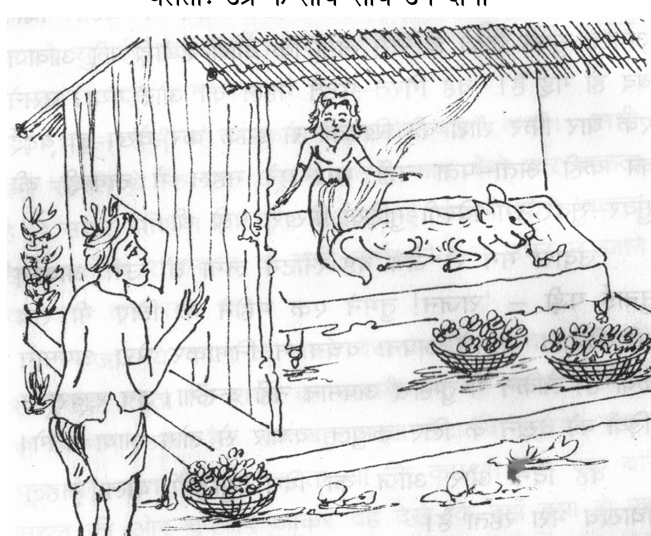

एक दिन की बात है. बहुत सवेरे तारों की छांह में जब पत्नी झोपड़ी से बाहर निकली तो उसने देखा कि सफेद रंग की खूबसूरत बिल्ली कचनार के पेड़ तले दुबकी बैठी है. वृद्धा ने उसे पुचकारा और वह उसके पांवों से लिपट गई. वह बिल्ली भी उस के साथ झोपड़ी के अन्दर आ गई. दोनों एक दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए. उसने बिल्ली को भुने आलू खाने को दिये.

पौ फटने पर वह पड़ोसी झोपड़ी से थोड़ा सा दूध और थोड़े से चावल ले आयी और बिल्ली को खाने के लिए दे दिया. बिल्ली की खुशी का ठिकाना नहीं रहा. यूं तो उन दोनों ने कभी किसी के सामने हाथ नहीं पसारा न किसी तरह दूध का जुगाड़ करने लगे, क्योंकि वे उसे अपनी बेटी मानते थे. वैसे भी पशु ज्यादा वफादार होता है.

इसी तरह समय गुजरता रहा. सर्दी-गर्मी वसन्त, पतझड़ आ-आ कर लौटने लगे. वे तीनों बहुत खुश थे. पर बिना काम-धाम के कैसे चलता. उम्र के साथ-साथ उन दोनों को काम करने में मुश्किल होने लगी और चलने-फिरने में भी. बिल्ली भी भूखी रहने लगी और माता-पिता की हालत देखकर उदास रहने लगी.

'क्या मैं घर के बाहर ज़रा खुली हवा में टहल आऊँ?' बिल्ली ने मां से पूछा.

'अपना ध्यान रखना' कहकर मां ने उसे बाहर जाने की इज़ाज़त दे दी. गली के कुत्तों और दूसरों जानवरों से बचती-बचाती वह घने जंगल में जा पहुंची. उसने एक खूबसूरत झरना देखा और सोचा कि क्यों न मैं इसमें नहा लूं. डर से नहायी तो नहीं लेकिन तीन घूंट पानी के जरुर पी लिए. पानी पीने की देर थी कि देखते ही देखते वह खूबसूरत लड़की बन गई.

उसकी खुशी का ठिकाना न रहा. उछलती फुदकती वह अपने मां-बाप के घर जा पहुंची. मां से लिपट कर वह बोली-'मां, मां! तुमने मुझे बहुत-बहुत प्यार दिया है. अब मैं तुम दोनों की सेवा करूंगी. उन्हें कुछ समझ में नहीं आया.

आजकल तो अपना पेट भरना मुश्किल हो गया है. अब इस तीसरे प्राणी का क्या होगा. वे दोनों सोच में डूब गए. पर बिटिया का चिन्ता से क्या काम. वह तो सिर्फ खुश थी. वह जहां-जहां भी जाती, आंगन में फूल खिलने लगते. फूलों की डलिया लेकर वह बाज़ार जाती. फूल बेचकर पैसों से खाने-पीने का सामान खरीदती और शाम को घर लौट आती. इतने सुंदर फूल गांव भर में नहीं थे. मज़े की बात यह थी कि बिना बीज, खाद और पानी के फूलों की खेती होती रहती. सामान आता रहता और परिवार की दशा सुधरती रहती.

कभी मां और कभी पिता पूछते, 'बेटी तू कौन है, कहां से आई?'

'मैं बेटी हूं आपकी. इससे ज्यादा कुछ जानिए भी नहीं' बेटी का जवाब होता.

खाना खाकर वह झोपड़ी में घुसती तो सवेरे ही निकलती. सवेरा होते ही रंग बिरंगे खुशबूदार फूलों का सिलसिला शुरु हो जाता. फिर बाज़ार जाने का, फूल बेचने का और सामान लाने का. उसने माता-पिता को कह रखा था कि

शेष पृष्ठ पर..१५ पर.

पतिव्रता

✍डॉ०अनीता पंडा
शिक्षा-एम.ए.(भूगोल,हिन्दी) स्वर्ण पदक, बी.एड., पी.एच.डी-हिन्दी
पुरस्कार-विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान, आकाशवाणी पुरस्कार-२००६ तथा नौह-का-लिकार्ड' के लिए प्रथम पुरस्कार
सम्प्रति-हिन्दी शिक्षण, कलाकार-आकाशवाणी
संपर्क-द्वारा श्री बी.के.पंडा, निदेशक, अर्बन अफेयर्स, रायतांग बिल्डिंग, शिलांगा-७६३००१, मेघालय

"तुम मुझे क्यों तलाक देना चाहती हो? मैं तो नहीं देना चाहता, आखिर क्यों?" रमेश बड़े उदासीन स्वर में बोल रहा था.

"तुमने कभी अपना पति-धर्म निभाया है?"

"क्यों सबकुछ तो दिया है, मान-सम्मान, ऐशो-आराम. तुम्हें क्या शिकायत है मुझसे, जो शादी के दस साल बाद तुमने यह फैसला ले लिया और मुझे इसकी भनक तक नहीं मिली."

"वह तो तुम्हें उस समय सोचना चाहिए था, जब तुमने मुझे अपने मित्र के साथ संबंध जोड़ने की बात कही थी. छिः यह सोचकर जी मिचलाता है."

"पुष्पा, मैं मानता हूं कि यह मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी भूल थी और उसका कारण भी तुम जानती हो. मैं उसके लिए तुमसे माफी मांगता हूं."

रमेश की किसी भी बात का पुष्पा पर कोई असर नहीं हो रहा था. उसकी सुनने और समझने की शक्ति मानो बन्द हो गयी थी. कैसे झेलते आयी थी वह इस लिजलिजाते इन्सानरुपी पति को? उसे स्वयं पर आश्चर्य हो रहा था.

उनका विवाह कोई प्रेम-विवाह नहीं था, जो उसे कुछ जानने एवं समझने का मौका मिलता. शादी के लिए जन्मपत्रियां मिलायी गयीं. ग्रह-नक्षत्रों की गणना हुई. ज्योतिष के अनुसार केवल दस गुण मिल रहे थे. वैवाहिक जीवन सुखमय तो रहेगा परन्तु कुछ बाधाएं भी आयेंगी. वैसे थोड़ी-बहुत बाधाएं सभी के जीवन में आती है. माता-पिता थोड़े घबराए जरुर, पर उन्होंने पुष्पा से पूछना जरुरी समझा. सबसे अच्छी बात तो यह थी कि लड़का बैंक में अच्छे पद पर काम करता था, साथ ही दहेज की कोई मांग नहीं. पुष्पा के मन में भावी पति और ससुराल वालों के प्रति आदर उत्पन्न हुआ. आज के युग में बहुत कम ही लोग दहेज-विरोधी होते हैं. इस प्रकार पुष्पा की सहमति से शादी तय हो गयी.

पुष्पा ने रमेश की एक झलक मंगनी में देखी. 'कितने आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी उसका पति होगा' यह सोचकर उसका मन रोमांचित हो उठा. घर में आए मेहमानों से घिरा रमेश किसी राजकुमार से कम नहीं लग रहा था. वह सचमुच पुष्पा के सपनों का राजकुमार था.

विवाह का शुभ दिन भी आ गया. पुष्पा अपनी आंखों में सुदर्शन पति एवं भावी जीवन के सपने सजाए विदा हो गयी.

"तुम मुझे क्यों तलाक देना चाहती हो? मैं तो नहीं देना चाहता, आखिर क्यों?" रमेश बड़े उदासीन स्वर में बोल रहा था.
"तुमने कभी अपना पति-धर्म निभाया है?"

मां की कही बातें उसके कानों में गूंज रही थी-"बेटा, यद्यपि जो मैं कहने जा रही हूं, वे बातें पुरानी है, पर ये बातें युगों-युगों से चली आ रही है. अब शादी के बाद पति का घर ही तुम्हारा घर है. वह ही तुम्हारे दुःख-सुख का साथी है आदि, आदि..."

"पुष्पा गाड़ी से उतरो. क्या सोच रही हो?" रमेश की मां का मधुर स्वर कानों में पड़ा. अतीत अपने वर्तमान में लौट आया. घर खूब भरा था. रात को रिसेप्शन खत्म हुआ और चिर-प्रतिक्षित मधुर यामिनी आ गयी, जिसका जीवन में बहुत महत्व होता है. रमेश के पदचाप सुनकर पुष्पा मानो गठरी-सी बन गयी.

"पुष्पा, दिन भर के कार्यक्रम के बाद तुम बहुत थक गयी होगी."

"हां, नहीं तो."

"अच्छा, सो जाओ. कल सुबह ही हम मेरठ जा रहे हैं क्योंकि मेरी छुट्टियां खत्म होने वाली है."

अगले दिन दोनों मेरठ चल पड़े. पुष्पा भीड़ भरे घर से दूर अपने पति के साथ अकेले रहने के सुखद कल्पना में डूब गयी. क्वार्टर में पहुंचते ही दोनों घर की साफ-सफाई में जुट गये. पुष्पा के हाथ का खाना खाकर रमेश ने उसका हाथ चूम लिया, "कितना अच्छा पकाती हो. चलो, रोज-रोज खाना पकाने से मुझे छुट्टी मिली."

"मुझे और भी बहुत कुछ आता है, तुम्हें धीरे-धीरे पता चलेगा."

"मैं जानता हूं कि मेरे माता-पिता की पसन्द अच्छी हैं."

जैसे-जैसे रात गहराती जाती, पुष्पा के दिल की धड़कन तेज होती जाती. डिनर खत्म करके दोनों बेडरुम में आये. पुष्पा को लगा कि रमेश बीच-बीच में कुछ सोचता रहा. वह पूछ ही बैठी, "क्या बात है, आप कुछ सोच रहे हैं"

"नहीं तो, कुछ भी नहीं."

"अगर कोई बात है, तो मुझसे कहिए. मैं आपकी पत्नी हूं." शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं.

"नहीं, मेरी कोई मदद नहीं कर सकता, भगवान भी नहीं."
"आप कहकर तो देखिए."
"पुष्पा, तुम एक समझदार लड़की हो, आशा है बात को अन्यथा नहीं लोगी" पुष्पा अधीर हो उठी. एक अज्ञात आशंका से भर गयी. रमेश कह रहा था-"जानती हो पुष्पा मैं तुम्हें सब सुख दे सकता हूं किन्तु शारीरिक सुख नहीं. तुम्हें मातृत्व का सुख नहीं दे सकता."
पुष्पा काठवत् सुन रही थी. सागर की-सी गहराई में उतरती हुई आवाज में केवल इतना पूछा कि क्या तुम्हारे माता-पिता को यह बात पता है?
"नहीं, उन्हें नहीं पता है, और मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि यह बात तुम किसी को मत बताना. नहीं तो समाज और परिवार में मैं मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहूंगा. मैं आत्महत्या कर लूंगा. वैसे भी अपने पति के सम्मान की रक्षा करना पत्नी का सबसे बड़ा धर्म हैं."
आत्महत्या की बात सुनकर पुष्पा सिहर उठी. अगर वह रमेश से अलग होने की सोचती है, तो उसके वृद्ध माता-पिता पर क्या गुजरेगी. दूसरी बहनों की शादी कैसे होगी? मिडिल क्लास की मानसिकता वह अच्छी तरह से जानती है. कम से कम रमेश ने दहेज न लेकर उसकी और उसके माता-पिता की मदद की है. चलो जिन्दगी से समझौता कर लेते हैं.
इस तरह पॉलिश्ड जिन्दगी चलने लगी. दोनों जहां जाते उस जोड़े की सभी तारीफ करते. जैसे लगता दोनों एक-दूसरे के लिये बने हों. शादी के पांच साल गुजर चुके थे. अब उनके घर में किसी नये मेहमान की सूचना की प्रतीक्षा सबको होने लगी. अक्सर लोग कहते कि बहुत हो चुकी फैमिली प्लानिंग. कब नया समाचार सुना रहे हो तुम लोग. इसका उत्तर न तो पुष्पा के पास था न ही रमेश के पास. पुष्पा का जी चाहता था कि वह सबको चीख-चीखकर बता दे कि अब उनके घर में कोई नया समाचार कभी नहीं सुनाई देगा, पर चुप रहती.
एक दिन रमेश अपने मित्र अनुज को घर लाया. काफी हंसमुख स्वभाव का व्यक्ति था. पुष्पा पहले भी उससे मिल चुकी थी. काफी देर तक गप-शप होती रही. रमेश ने आग्रह कर उसे खाने पर रोक लिया. अनुज अब अक्सर घर पर आ जाता. तीनों एक साथ डिनर करते तथा कभी-कभी घूमने निकल जाते. पुष्पा को लगा कि रमेश जानबुझकर अनुज को रोक लेता है. उसने रमेश से कह दिया कि क्या बात है, अनुज यूं रोज-रोज यहां क्यों आता है? मुझे बड़ा अजीब-सा लगता है. इस तरह से घर आने पर लोग क्या सोचेंगे? "लोग क्या सोचेंगे, इसकी मैं परवाह नहीं करता. यह मेरा घर है जिसे चाहूं, बुलाऊँ."
"क्या तुम्हें लोगों की परवाह नहीं है, तभी अपने जीवन के कटु सत्य को आजतक छिपाये रखा है."
"उसके लिये मैंने कुछ सोच रखा है, तभी अपने जीवन के कटु सत्य को आजतक छिपाये रखा है."
"उसके लिए मैंने कुछ सोच रखा है, अगर तुम मेरा साथ दो तो. वैसे भी तुम मेरी पत्नी हो, तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए."

> "अगर कोई बात है, तो मुझसे कहिए.मैं आपकी पत्नी हूं."
> "नहीं, मेरी कोई मदद नहीं कर सकता, भगवान भी नहीं."
> "आप कहकर तो देखिए."
> रमेश कह रहा था-"जानती हो पुष्पा मैं तुम्हें सब सुख दे सकता हूं किन्तु शारीरिक सुख नहीं. तुम्हें मातृत्व का सुख नहीं दे सकता."

"कहीं तुम कुछ उलटा-सीधा तो नहीं सोच रहे" पुष्पा के मन में अनेक अज्ञात शंकाओं ने जनम ले लिया.
"तुम्हें अनुज में दिलचस्पी लेनी चाहिए"
"पति होकर ऐसी बातें करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती."
"शर्म तो तब आती है, जब लोग मुझसे पूछते है, अब तक घर में कोई मेहमान क्यों नहीं आया. अतः इस समस्या का समाधान तुरन्त हो जाना चाहिए."
"नहीं मुझसे नहीं होगा ये सब. मेरा गिल्ट मुझे जीने नहीं देगा."
"इसमें गिल्ट की क्या बात है? महाभारत में भी वंश को चलाने के लिए महारानी सत्यवती ने ऋषि व्यास से अनुरोध किया था."
"मुझसे नहीं होगा ये सब. मैं महारानी सत्यवती की बहू नहीं हूं, मेरी अपनी मर्यादा है. हम किसी बच्चे को गोद क्यों नहीं लेते."
"क्या कहा? गोद ले लें. गोद लेने से क्या सबको सच्चाई का पता नहीं चल जायेगा और मेरे मम्मी-पापा उस बच्चे को स्वीकार करेंगें?"
रमेश ने अपना अन्तिम हथियार छोड़ा-"ठी मैं सन्तानहिवीन रहूंगा पर याद रक्खो अगर तुमने मेरी बात नहीं मानीं तो मैं तुम पर चरित्रहीनता का अरोप लगाकर तुम्हें घर पहुंचा दूंगा. तुम तो जानती हो समाज के लोग किसकी बातों पर विश्वास करेंगें. पुष्पा याद रखो मैं तुम्हें कभी चैन से जीने नहीं दूंगा."
पुष्पा जिस पुरुष की विवशता पर सहानुभूति रखती थी, आज उसके इस रूप को देखकर घृणा से भर उठी, "ठीक है जैसा तुम चाहो" कहकर उसने हथियार डाल दिया.

आज, उसका पति ही उसके लिए पर-पुरुष बन गया. अनुज के साथ बीतता हुआ पल अब उसे रास आने लगा. अनुज के सम्पर्क में आकर उसे सच्चे आनन्द की अनुभूति हुई, जिससे वह अब तक अनभिज्ञ थी. वह उसके दिल के बहुत करीब था. अनुज के साथ बिताये एक-एक पल को वह अपनी मुट्ठी में कैद कर लेना चाहती थी. उन्हीं दिनों उसे पता चला कि वह मां बनने वाली है. वह यह समाचार सबसे पहले अनुज को ही देना चाहती थी. जैसे ही अनुज आया, उसकी दृष्टि पुष्पा के रक्ताभ चेहरे पर गयी. वह पूछ बैठा कि क्या बात है, कोई नया समाचार है? पुष्पा ने हंस कर सिर झुका लिया. दोनों रमेश की प्रतीक्षा करने लगे.

रमेश के आते ही अनुज प्रसन्नता से बोल उठा-"रमेश मेरा काम अब खतम हुआ पर मैं तुम्हारी पत्नी से अब प्यार करने लगा हूं."

"प्यार शब्द तो किताबी बातें हैं. ये तो एक एग्रीमेंट था, जो पूरा हुआ. अब तुम कभी भी पुष्पा से नहीं मिलोगे. कानूनन पुष्पा मेरी पत्नी है."

पुष्पा का मन कड़वा-सा हो गया. यहां प्यार एक एग्रीमेंट था. चुपचाप बेडरुम की ओर चल पड़ी. बहुत देर तक सुबकती रही. रमेश के बहुत समझाने पर भी वह अपने अन्दर के गिल्ट को नहीं निकाल पा रही थी?

रमेश उसका बहुत ख्याल रखता. हर समय उसे खुश रखने का प्रयास करता. पुत्र-जन्म की खुशी में बहुत बड़ी पार्टी रखी गयी. सारे घरवाले, पुष्पा के माता-पिता सभी खुश थे. उनकी खुशी देखकर पुष्पा का दुःख कम हो गया. उसका बेटा 'मनु' अब पांच साल का हो गया, वह स्कूल जाने लगा. रमेश अक्सर मनु के सामने कहता, "देखो, पुष्पा मनु मेरे जैसा दिखाई देता है न"

"मम्मी, मम्मी! सब मुझे पापा की कॉर्बन कापी कहते हैं, मैं हूं न!"

"हां बेटा"

"पुष्पा, तुमने मुझे जीवन की सबसे बड़ी खुशी दी है उसे मैं नहीं भुलन सकता." रमेश की ये बातें उसे बड़ी दूर से आती प्रतीत हो रही थीं. "बस तुम मेरा एक काम कर दो, फिर मैं तुम्हें कुछ भी नहीं करने को कहूंगा. पुष्पा सुन रही हो न."

"हां, बोलते जाओ, तुम्हें सुनना और मानना मेरा धर्म हैं."

"क्या तुम व्यंग्य कर रही हो?"

"उसका अधिकार है क्या मेरे पास?"

"अच्छा सुनो, मेरे प्रमोशन की बात चल रही है. याद है उस दिन रविार को खन्ना साहब के घर पार्टी में तुम मेरे बास से मिली थी न, वे तुम्हारी बहुत तारीफ कर रहे थे."

"तो ये कौन सी नयी बात है. पार्टियों में एक-दूसरे की तारीफ करना एक औपचारिकता बन गयी है. आगे बताओ तुम क्या कहना चाहते हो?"

"पुष्पा, तुम अगर उन्हें अपनी कम्पनी दे सको तो मेरा प्रमोशन जल्दी हो जाएगा."

इस बार पुष्पा के मन में कोई हलचल नहीं हुई. बड़े शान्त और गम्भीर स्वर में बोल उठी-"क्या यह भी एक पत्नी का धर्म है. प्रमोशन काम करने से नहीं मिलता है तो मत लो. विवाह के सात फेरे लेते समय यह शपथ तो नहीं ली थी कि सन्तान के लिये 'एग्रीमेंट' और प्रमोशन के लिए 'कम्पनी' देनी पड़ेगी. अब मैं अपने आपको शादी के एग्रीमेट से मुक्त करती हूं. आज मैं पतिव्रता नहीं, केवल पुष्पा हूं."

> "तुम्हें अनुज में दिलचस्पी लेनी चाहिए" "पति होकर ऐसी बातें करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती."
> "शर्म तो तब आती है, जब लोग मुझसे पूछते है, अब तक घर में कोई मेहमान क्यों नहीं आया. अतः इस समस्या का समाधान तुरन्त हो जाना चाहिए."

फूलों वाली राजकुमारी पृष्ठ १२ का शेष

उसकी असलियत जानने की कोशिश न की जाए पर उन्हें चैन कहां?

फिर आधी रात को उन दोनों ने झोपड़ी के सुराख से देखा. उन्होंने देखा कि लड़की के बिस्तर पर एक सफेद बिल्ली औंधें मुंह पड़ी है. उनके देखने भर की देर थी कि बिल्ली एक सुन्दर लड़की बन गई. 'आपने मेरा असली रुप देख लिया है. इसीलिए मैं अपने फूलों के देश जाऊंगी. आपकी भलाई की कहानी मेरे देश की हर जुबान पर है. मैं आपकी सहायता करने बिल्ली बन कर चुपके-चुपके आपके देश चली आई थी.

उसके जाने की बात सुनकर माता-पिता फूट-फूट कर रोने लगे. पर अब क्या हो सकता था.

'लेकिन आप चिंता न करें. आपके आपके आंगन में हमेशा रंग-बिरंगे फूल खिलते रहेंगें. मैं आपकी सेवा का बदला नहीं चुका पाऊंगी.'

इतना कहते ही राजकुमारी तेज हवा के झोंके पर सवार होकर अपने देश चली गई और वह गांव 'फूलों वाला गांव' के नाम से जाना जाने लगा.

> लड़की ही जगत जननी है, लड़की ही पालनहार है, लड़की ही दुर्गा, काली है. फिर भ्रूण हत्या क्यों? दाऊजी

सम्मानार्थ प्रविष्टियॉ आमन्त्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

डॉ.किशोरी लाल सम्मान-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में

प्रवासी भारतीय सम्मान-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हो. एक रचना तीन प्रतियां

हिंदी सेवी सम्मान-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

राजभाषा सम्मान-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में

राष्ट्रभाषा सम्मान-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियो में

युवा कहॉनीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-सम्बन्धित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

कला/संस्कृति सम्मान-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में

बाल साहित्यकार सम्मान-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए,

पुलिस हिंदी सेवा सम्मान- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियो में

सांस्कृतिक विरासत सम्मान- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

विधि श्री-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में

डॉक्टरश्री-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

शिक्षक श्री-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

सैनिक श्री-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विज्ञान श्रीः विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

प्रशासक श्री-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में

विहिसा अलंकरण-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी.

साहित्य के क्षेत्र में: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

समाज सेवा के क्षेत्र में: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाज गौरव

विशेष:१. प्रविष्ट्रि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जबाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा

पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तके/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं के साथ मोलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०ः ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले...
.सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ....
पिता/पति का नामः..
पताः...
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...
विधा...................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियां..............
धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................संख्या......................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें मान्य करता/ करती हूं

प्रस्तावक
नाम..............................
पूरा पता.......................
हस्ताक्षर..........................

भवदीय
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

कैसे बनेगा मेरा भारत महान

हर आदमी सोचता है
इस देश में कभी न भ्रष्टाचार हो
हर इंसान के अन्दर
पारदर्शी और नेक विचार हो।
हर आदमी सोचता है
संतान इंजीनियर या डॉक्टर हो
कोई विदेशी अफसर हो
एस.पी.चाहे कलेक्टर हो।
हर आदमी सोचता है
स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण हो
शांति अहिंसा बनी रहे
पैसा नहीं प्रतिभा का गुणगान हो।
हर आदमी सोचता है
फिर कोई गांधी, नेहरु, लाल हो
वीरों की धरती पर
फिर कोई लक्ष्मी, भगत, सुभाष हो।
पर कोई ये नहीं सोचता
दूसरो से पहले स्वयं के नेक विचार हो
किसी और के नहीं
गाँधी, सुभाष उसकी ही संतान हो
ऐसे में कैसे होगा
स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण
सत्यम शिवम सुन्दरम् वाला
कैसे बनेगा मेरा भारत महान?

डॉ. संगीता बलवन्त, प्रीतम नगर कॉलोनी, वंशीबाजार, गाजीपुर २३५००१

नई आकृति

मेरे शब्दों ने तैयार किया
एक विशाल गुबंद
जिसमें गूंजती है मेरी आवजें
जिसके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं
कोई परिचय या पहचान नहीं
जिनके बिना मैं हूं अधूरी।
शब्द है मेरा वत्सल हाथ
जो रहता सदैव मेरे सिर पर
जिससे जीवन का सफर हो जाता आसान
मंजिल की दूरियों का अहसास न होता।
शब्द है सूर्याभा
जो हर पल लाते हैं मेरी ज़िन्दगी में
उजाला ही उजाला।
ज़िन्दगी के बुझते चिराग को देते
उम्मीद की लौ।
धुंधले अक्स में करवाते
सच्ची अनुभूति का अहसास
अंधेरों में अहसास करवाते रोशनी का
धूप में छांव बन देते हैं राहत
और जाड़ों में गुनगुनी सी अनुभूति।
शब्द, मेरी आकृति को देते हैं नई आकृति
और मैं हो जाती हूं धन्य-धन्य।

जसप्रीत कौर 'फलक'
शिक्षा-बी.एस.सी,एम.ए., कम्प्यूटर कोर्स
विधाएं-कविता, व्यंग्य, कहानी **सम्मान**-साहित्य श्री, भारती भूषण, साहित्य शिरोमणि, भारत भूषण, गंगा गौरव पुरस्कार
सम्पर्कःमकान नं०११, सेक्टर १ए, गुरुज्ञान बिहार, डुगरी, लुधियाना, पंजाब

मैं अजन्मी

मैं अजन्मी
हूं अंश तुम्हारा
फिर क्यों गैर बनाते हो
है मेरा क्या दोष
जो, ईश्वर की मर्जी झुठलाते हो

मैं मांस-मज्जा का पिण्ड नहीं
दुर्गा, लक्ष्मी औ' भवनी हूं
भावों के पुंज से रची
नित्य रचती सृजन कहानी हूं

लड़की होना किसी पाप की
निशानी तो नहीं
फिर
मैं तो अभी अजन्मी हूं
मत सहना मेरे लिए क्लेश
मत सहेजना मेरे लिए दहेज
मैं दिखा दूंगी
कि लड़कों से कमतर नहीं
माद्दा रखती हूं
श्मसान घाट में भी अग्नि देने का

बस वितनी मेरी है
मुझे दुनिया में आने तो दो।

आकांक्षा यादव
जन्म-३० जुलाई १९८२
शिक्षा-एम.ए.संस्कृत
कृतिः क्रान्ति-यज्ञ १८५७-१९४७
सम्मान-साहित्य गौरव, काव्य मर्मज्ञ, साहित्य श्री, साहित्य मनीषी, भारत गौरव, भाषा भारती रत्न, इत्यादि
सम्पर्कः सीओ श्री कृष्ण कुमार यादव, निदेशक डाक, प्रधान डाकघर, सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

ग़ज़ल

आस्था के दीप सदा, मन में जलते रहे
रास्ता जो मिला, उस पर चलते रहे
आंखों की नींद सारी, रातें चुराकर ले गई
स्वप्न फिर भी सदा, पलकों पर पलते रहे
रोशनीं के लिए होते हैं झगड़े नित
मैंने खुद को जलाया, अंधेरों के लिए
यूं तो कांटे है जिंदगी हर डगर
फुलों को तलाशते पथ पर चलते रहे
दर्द ने पूछा हमें, एक दिन हार कर
राज क्या है बता? जो सदा हंसते रहे
धन-ऋण का गणित हमनें सीखा नहीं
प्रीत-प्रीत कर गुणा, माला गढ़ते रहे
आस्था के द्वीप सदा मन में जलते रहे
रास्ता जो मिला उस पर चलते रहे।

श्रीमती सुधा शर्मा,
ब्राहम्ण पारा, राजिम, रायपुर, छ.ग.

ग़ज़ल

प्रेम करते प्राणियों से,
कब रुके बदनामियों से।
भिक्षकों से कुछ न मिलता
दान मिलता दानियों से।
लाख कोशिश की न लौटे
जो जुड़े रजधानियों से।
चल पड़े संकल्प लेकर
कब डिगे हैं आंधियों से।
कब डरे प्रेमी दिवाने
बर्छियों से, लाठियों से।
जंगलों में रात काटें
दिल लगा वीरानियों से।
कोख में ही मार डालें
प्रभु बचा हत्यारियों से।

डॉ० इन्दिरा अग्रवाल, ३/२५, अग्निहोत्री सदन, न्यू लेखराज नगर, अलीगढ़, उ.प्र.

जटाधारी सन्त

जटाधारी सन्त ने घंटी बजाई।
बच्चों ने जाकर खबर सुनाई।।
गांव में हलचल मच गई भाई।
साधू-सन्तों की एक टोली आई।।
गली-गली में घूमें झांझ बनाई।
घूमी रमाये जा बरगद छाईं।।
रोग निवारे झाड़न घुमाई।
दवा पुड़िया देने मुफ्त बनाई।।
एक सिला ऊँची बिठवाई।
राधा-कृष्ण की प्रतिमा पदराई।।
बालक मण्डली एक बनाई।
उत्तम शिक्षा देते उन्हें बुलाई।।
बाल वृन्द खुश होते मन माई।
गुरुजन आशिष मांगे आई।।
सन्ध्या को सब ग्रामीण आई।
मिल जुल भजन करत सुखदाई।।
गरमी बीती बरखा ऋतु आई।
नित नवीन त्यौहार मनाई।।
जन्म अष्टमी भादों में आई।
सन्त ने मेला एक भरवाई।।
गांव में रुतबा जम गया भाई।
सन्त चरण सब शीश नवाई।।

सुश्री रेशम गुप्ता, शंशाक सदन, बहादुरगंज, उज्जैन, म.प्र.

भला ये हसीना है आई कहां से

खरामा खरामा चले आ रहे हैं,
यूं लगता है जैसे किसी परिस्तां से।
नजाकत भरी शोखियों का है मंजर,
वो लाये हैं रंगत किसी गुलिस्तां से।।
हो नागिन का शुबहा है चाल ऐसी,
चुरा लाये खुशबु किसी बांगवां से।
वो गहरी सी आंखे और शाने पे मोती,
ये शबनम नहीं कम किसी शबिस्तां से।।
माथे की बिंदी चमकती है ऐसे,
जरा सी नहीं कम किसी कहकशां से।
सुराही सी गर्दन में पहना नगीना,
सितारे उतर आये ज्यों आसमा से।।
महक उनकी फूलों से बढ़कर हसीं है,
कहीं गुल खफा ना हो ऐसे बयां से।
खुदाई बनाकर उन्हें पूछ बैठी,
भला ये हसीना है आई कहां से।।

मंजर-दृश्य, रंगत-रंग, शबिस्तां-शबनम भरा बगीचा

श्रीमती प्रभा पाण्डेय 'पुरनम' ५७८, रतन कॉलोनी, गोरखापुर, जबलपुर-४८२००१, म.प्र.

बात नसीबों की

सागर के दिल में सब कुछ है
वो प्रेमी गहरा है
पाया भर-भर हाथ उसी ने
जो गहरे तैरा है।१।
जो भी जल को हाथ लगाता
औजुरि में ले प्यास बुझाता
जब भी गिरता जमीं पे गोबर
माटी साथ में 'सरोज' लाता।२।
बात नसीबों की रह जाती
हाथ लिया श्रम झोली पाती.
किसी की झोली हीरे मोती
'सरोज' किसी की कांच उठाती।३।
नदियों ने अर्पित सब कीन्हा
सागर का हिवड़ा रिच कीन्हा
'सरोज' सागर ने भर हार अपना
उनकी आंखों का सुख छीना।।४।।

डॉ० सरोज गुप्ता, रीडर हिन्दी, ४/२६६, बालूगंज, आगरा, उ.प्र.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाएं

बेटा-मम, ये गर्ल फ्रेंड क्या होती है?
मम-जब तुम बड़े होके अच्छे लड़के बनोगें तो तुम्हें भी एक मिलेगी.
बेटा- अगर अच्छा लड़का नहीं बना तो?
मम- तो फिर बहुत मिलेंगी.

++++++++++++++++++++++++

बुजुर्गो ने कहा है कि पति-पत्नी एक गाड़ी के दो पहिये हैं. अगर दोनों में से एक भी खराब हो जाये तो गाड़ी नहीं चल सकती, इसलिए एक स्टेपनी (गर्ल फ्रेंड) हमेशा रक्खों.

++++++++++++++++++++++++

प्यार को जब प्यार हुआ तो प्यार ने प्यार से पूछा कि प्यार कैसा होता है. तो प्यार ने प्यार से कहा-जो इस एसएमएस को प्यार से पढ़ रहा है प्यार उसके जैसा होता है.

++++++++++++++++++++++++++

प्रिय उपभोक्ता एयरटेल लाया है सिर्फ आपके लिए आज ही किसी भी कुंवारी लड़की लड़की को रास्ते में पकड़ कर किस करिये और पाये पब्लिक के लात घुस्से बिल्कुल मुफ्त. **मो०९३३५१३८३८२**

ग़ज़ल

लम्हा मिल जाए जो राहत का बहुत काफ़ी है।
एक ही फूल मुहब्बत का बहुत काफ़ी है।।
मेरे हर सम्त तिरा दस्ते-करम है, मालिक।
ये तसव्वुर ही हिफ़ाज़त का बहुत काफ़ी है।।
तेरी दावत से नहीं लेना है कुछभी मुझको।
इक निवाला ही मशक़्क़त का बहुत काफ़ी है।।
नस्ले-आदम में गवारा नहीं होगी तफ़रीक़।
ये भी ऐलान हुकूमत का बहुत काफ़ी है।।
अहदे-हाज़िर की बिगड़ती हुई हालत के लिए।
एक दस्तूर शराफ़त का बहुत काफ़ी है।।
क्या है बातिल, ये बताने के लिए वक़्ते-अज़ीम।
इक तमांचा ही हक़ीक़त का बहुत काफी है।।
जुल्म के घोर अंधेरों को मिटाने के लिए।
इक दिया अज़्में-बग़ावत का बहुत काफ़ी है।।
तू खताओं की सज़ा पाए, न ख्वाहिश मेरी।
सिर्फ़ एहसास निदामत का बहुत काफ़ी है।।
'राज' हस्सास तबीअत के लिए वक़्ते-विसाल।
एक ही लफ़्ज़ शिकायत का बहुत काफ़ी है।।

✍**डॉ० राजकुमारी शर्मा 'राज'**, सी/डी-३०,
पुराना कवि नगर, गाजियाबाद-२०१००७,उ.प्र.

दिल का रिस्ता

प्यार करते समय हजारो बाते किया करते थे
अब एक बात बोलने के लिए हजार बार तरस रहे हो
क्या डर लगता है वादे को अपनाने
क्या डर लगता है वादे निभाने
थोड़ा याद करो पुराने बाते
थोड़ा यकीन करो मेरी बाते
भूल जाओ जो गुजर गये बाते
भूल जाओ उस चिन्ता की बाते
सिर्फ हम दोनो प्रेमी नहीं
सिर्फ हम दोनों संगाती नहीं
हम दोनों का दिल का रिश्ता
जन्म-जन्म का है
हम दोनों का अनुराग...

✍ **एडविनु कर्वालों,**
विद्यानगर, शिमोगा-३, कर्नाटक
शिक्षा-एम.ए, बी.एड-हिन्दी,
उम्र-२८ वर्ष, **रुचियां**- चित्रकला,
संगीत, कहानी पढ़ना, कविताएं
लिखना, गाना आदि.

अभिलाषा हो

पुत्री तुम मेरे जीवन की, सबसे प्यारी अभिलाषा हो।
कुछ भी कहने की बात नहीं, नारी की तुम परिभाषा हो।
पाया जो तुम्हें ऐ नन्हीं कली, मुस्कानों में तेरे स्वर्ग छिपा।
स्पर्श तेरा पावन निश्छल है, है रूप तेरा बस जाये हिया,
सच कहती हूं मेरे स्वप्नों की, तुम सुन्दर सी एक आशा हो
पुत्री..............................अभिलाषा हो।
जब पांव तेरे नन्हें-नन्हें, बजती पयजनियां रूनझुन-रून।
मेरे घूंघट में छिपते नैना, देखूं तुझको होते आतुर।
तब लगता कि मैं यशोदा हूं, तुम कान्हा हो या राधा हो।
पुत्री..............................अभिलाषा हो।
तेरे नैनों से जब-जब आंसू की, बूंद लुढ़कती दिखती है।
तू क्या जाने मेरी दृढ़ता तब नींव भी हिलती लगती है।
सुन लो मत रोना ऐ बेटी, इस मां की तुम एक भाषा हो।

✍**श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली',**
बी/६१३, इन्दिरा नगर, आवास-विकास कॉलोनी,
रायबरेली-२२६००१, उ.प्र.

अभिसार

पाने से पहले खोने का डर लगता है,
मिलने से पहले विछड़ने का भय लगता है।
करती हूं निशदिन अब मैं पूजा तेरी
पल पल मुझको तो अब ये जीवन ठगता है।।
बीते हैं जो स्वर्णिम पल मेरे जीवन में
आहों की गर्मी से अब तो हृदय दगता है।
प्रणय निवेदन प्रिय अभिसार करो सपने में,
बिन तेरे अब मेरा जग से मन भगता है।।

अधराधर

याद में बहते हैं अश्रु, नित हमारे अब प्रिये
संग बीते पल सुनहरे, स्मृत कराते सब प्रिये।
स्वप्न में रखते तुम्हें हम, अपने बाहुपाश में,
करते तुमसे नित बातें, नींद आती कब प्रिये।।
रूप स्वपनिम तुम्हारा बातें, नींद आती कब प्रिये।।
रुप स्वपनिम तुम्हारा, आकृष्ट करता नित मुझे,
अब अधराधर मिलन से, होंगे तक कब लब प्रिये।
रूप, रस, गंध से, प्रिय,
दीखे हैं अब निश्छले,
अभिसार होगा प्राण तब,
कृपा होगी रब प्रिये।।

✍**सुश्री सुरेखा शर्मा**
म.न. ६३६, सेक्टर ई/ए-१०,
गुड़गांव, हरियाणा

हठीली इच्छाएं

प्रोमिला भारद्वाज
शिक्षाः बी.ए.आनर्स, एम.ए., बी.एड.
विधाःकविता हिन्दी व अंग्रेजी, गीत व ग़ज़ल
अभिरूचिः साहित्य का पठन-लेखन, साहित्यिक व सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी
सम्प्रतिः औद्योगिक प्रोत्साहन अधिकारी
सम्पर्कः जिला उद्योग केन्द्र, बिलासपुर, हि. प्र.१७५००१, मो०:९४१८००४०३२

चहचहती चिड़ियां
हैं ये इच्छाएं
पंख फैला
उड़ती-फिरती, उन्मुक्त
तन-मन में,
तन आकाश है क्या
मन है घौंसला?
स्वतन्त्रता से विचरें
फुदकतीं फिरें,
जिद्‌दी इच्छाएं
हों प्रसन्न
निज साम्राज्य मान
तन-मन को,
उथल-पुथल मचाएं
जब-तब, तीखी चोचों से,
नुकीले पंजों से
लहुलुहान कर जाएं,
इनकी उड़ानें, तन को थकाएं,
सोए तन, तो सोएं
स्वयं भी, सुस्ताती इच्छाएं,
मन रूपी घौसले में
पांव पसार,
मन को बिस्तर मान
सुनहरी स्वप्नों की
चमकीली चादर तान।
भोर भए, तन में
अंगड़ाईयां लें,
फिर से इच्छाएं
हलचल मचाएं।?
चाहूं इनसे पीछा छुड़ाना,
इन्हें उड़ाना
सदैव के लिये
होने को स्थिर चित्त से,
साधना में लीन,
करने को मंथन,
आत्मदर्शन,
चाहूं फुर्र से
उड़ जाएं 'शिव-शिव' कर
हर्र-हुर्र करूं
उड़ाऊं बहुत
मां नें है कहां-
कोई इन्हें समझाए
गर समझा पाए,
मुझे बताए,
इच्छाएं भगाने के उपाए
चहचहाती हठीली,
चिड़ियां है ये इच्छाएं
उड़ जाएं, चैन सब पाएं।

काया अब इस निज़ाम की

डॉ० नलिनी विभा 'नाज़ली'
जन्मः ०५ दिसम्बर १९५४
शिक्षाः एम.ए., एम.फिल, पी.एच.डी
सम्मानः शताधिक सम्मान व पुरस्कार
सम्पर्कः व्याख्याता, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर, हि.प्र., १७७००५

गिरती हुई अटारियां और चरमराते पुल
दुनिया की भुरभुरी सी कोई चीज़ हो गई

दौर-ए-ज़िवाल और ये बदकारियों का रोग
काया ही इस निज़ाम की मरीज़ हो गई

दलदल में हैं घोटालों के वो डूबे गले तक
अब राजनीति किस क़दर ग़लीज़ हो गई

रखें वो रहन या इसे चाहे वो बेच दें
भ्रष्टों के हाथ सत्ता अब कनीज़ हो गई

पुल टूट जाते हैं उखड़ती सड़के अगले रोज़
रिश्वत का ही मुनाफ़ा ये तजवीज़ हो गई

मशकोक इनके 'रोल' और बिगड़ा हुआ निज़ाम
सरकार चीथड़ों की बेकमीज़ हो गई

भ्रष्टों ने लूटने में न छोड़ी कोई कसर
कुर्बानी सरफ़रोशों की तावीज़ हो गई

क्या हो गया है आज ज़माने को 'नाज़ली'
जिन्से-ख़ुलूस किस लिए नाचीज़ हो गई?

सत चित आनन्दमयी विद्या

यह जीवन का शाश्वत सत्य है, इस मृत्युलोक में प्रत्येक मानव किसी न किसी दुःख से पीड़ित अवश्य है, प्रत्येक प्राणी इस दुःख से उबरना चाहता है. हम अविद्या रुपी भौतिक विद्या को विज्ञान आदि के माध्यम से इस मृत्युलोक के दुःखों को दूर कर सकते हैं-जैसे नये-नये संसाधनों से गर्मी को दूर करना, पानी की व्यवस्था करना, वायु की सुविधा आदि से भौतिक दुःखों का नाश हो सकता है, लेकिन मन की शान्ति आत्म परिष्कार, चित चैतन्य में प्रकाश तो सत-चित-आनन्दमयी विद्या ही अपेक्षित है.

परम-ब्रह्म परमात्मा ही सद् स्वरुप है. उसका किसी काल में अभाव नहीं होता, वह ज्ञान स्वरुप है, उसमें अज्ञान का लेशमात्र भी नहीं है. सत् क्या है? इसकी सत्ता का स्वरुप क्या है? "वस्तुं सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म। अज्ञानादि सकलं जड़समूहोऽवस्तु।।"

सत्-चित्-आनन्द अनन्त अद्वैतब्रह्म ही वस्तु है अज्ञान से लेकर सकल जड़समुदाय तो अवस्तु है.

वेदान्त सार में भी इस सन्दर्भ में कहा गया है-"अखण्डं सच्चिदानन्दम वाङ्मनस गोचरम्।/आत्मानमखिलाधार माश्रयेऽभीष्ट सिद्धये।।"

अतः तदनुसार सत्-चित-आनन्द स्वरुप परम शक्ति ही निःश्रेयस प्राप्ति का साधन है इसकी तीन प्रकार की सत्ता है.पारमार्थिक, व्यावहारिक, प्रातिभासिक. परब्रह्म की सत्ता पारमार्थिक है. व्यावहारिक सत्ता में ईश्वर, जीवात्मा, स्वर्ग नरक और सम्पूर्ण सृष्टि आती है. इनका कोई स्थायित्व नहीं लेकिन लौकिक जगत-सृष्टि चक्र में यह परम्परा एवं व्यवहारेण अस्तित्व वाले माने जाते हैं और प्रातिभासिक सत्ता का तो मात्र आभास मात्र होता है जैसे रस्सी में सर्प का भ्रम होना यह अज्ञानता वश होती है.

चित्-चैतन्य क्या है?:-चित् शब्द को तैत्तिरीय उपनिषद् में ज्ञान से उपहित किया गया है किन्तु शंकर के अनुसार चित् बुद्धि के अर्थ में नहीं आता, निरपेक्षता और सत्यता से सम्बद्धता रखता है. माण्डूक्योपनिषद् में भी चित् को ब्रह्म-स्वरुप में वर्णित किया गया है. अत्एव ब्रह्म को सत् कहा गया है. सदानन्दजी ने तो यहॉ तक कह दिया कि यदि वह सुखस्वरुप न होता तो विचार शील लोगों की प्रवृत्ति भी उस ओर न होती. और वृहदरण्यक के कथन "विज्ञानमानन्दं ब्रह्म" से इसकी पुष्टि होती है. चित् चैतन्य का वह गुण है, चैतन्य का प्रकाश है.

सांख्य आत्मा को (कर्म पुरुष) सत चित् तो मानता है किन्तु आनन्दरुप होने की प्रस्तुति नहीं देता, वेदान्त में आत्मा शुद्ध चैतन्य स्वरुप है वही सत है और आनन्द स्वरुप भी है तदनुसार जीव का अधिष्ठान रुप शुद्ध चैतन्य और तत् से परोक्ष तत्त्व का अधिष्ठान शुद्ध चैतन्य है.

अद्वैत-वेदान्त में भी चित-चैतन्य के सन्दर्भ में आत्मा को एक नित्य तथा स्व प्रकाश चैतन्य माना जाता है. विशिष्टाद्वैत वेदान्त में आत्मा को ज्ञाता और अहम् माना जाता है.

न्याय-वैशेषिक दर्शन में आत्मा का विचार वस्तुवाद के रुप में किया गया हैः आत्मा एक अचेतन द्रव्य है, जो विशेष अवस्थाओं में चैतन्य का आधार बनता है.

कुमारिल भट्ट ने "अज्ञानोपाधि ायुक्त चैतन्य" को आत्मा कहा है. जैसाकि श्रुति में भी प्रमाण है-"प्रज्ञानध

✍डॉ० रजनी शर्मा
जन्मः २२.०३.१९६८ **सम्प्रतिः** प्रवक्ता
शिक्षाः परास्नातक-संस्कृत/अंग्रेजी,पीएचडी
रूचिःसंस्कृत व हिन्दी साहित्य का पठन-पाठन
सम्पर्कः प्रवक्ता, संस्कृत, श्री भगवान शिव महाविद्यालय, २४०, कर्बला गली, एटा, उ.प्र. पिनः २०७००१

ान एवानन्दमय." अज्ञान की उपाधि के उत्कृष्ट रूप से उपहित हुआ चैतन्य ही ईश्वर है, ब्रह्म है और निकृष्ट उपाधि ा से उपहित चैतन्य जीव कहलाता है. यही जीव संसार में संसरण करता है. सभी में एक ही चैतन्य का आभास है. अज्ञानता को त्याग देने में चैतन्यांश पूर्ण चैतन्य में मिल जाता है.

अस्तु स्पष्ट है जगत के समस्त दार्शनिक-आस्तिक हों अथवा नास्तिक हों पाश्चात्य या पौर्वात्य हों-सभी आत्मा की चेतन सत्ता को अस्वीकार नहीं कर पाते.

आनन्द वह है जो अनन्त काल तक निरन्तर बढ़ता ही रहता है, कभी घटना ही नहीं अर्थात "आनन्दो ब्रह्म" उसके ही हम अंश है हम प्राणी माया अविद्या के फंसने पर भी आनन्द नहीं भूलते, क्योंकि अंश अपने अंशी को भूल नहीं सकता. अतः आत्मा ब्रह्म परमात्मा का अंश है खण्ड नहीं है. अतएव वही नित्य है प्रबुद्ध तथा पूर्ण है और आनन्दबर्धक है. उसके बिना चेतना कहां चित कहॉ?

जीव कैसे प्राप्त करे सत् चित-आनन्द- चैतन्यता का प्रकाश ही चित है. चित का प्रवाह मन में जाता है. मन माया से उत्पन्न है मन में कामनायें उत्पन्न होती है अर्थात जब व्यक्ति को प्रभू कृपा से सतोगुणी विद्या प्राप्त हो जाती है तब उसे शब्द स्पर्श,

रूप, रस, गन्ध से पूर्ण विरक्ति हो पाती है.

राग से वैराग्य कैसे? विषयासक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है यही राग है और जब व्यक्ति की कामनाओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो वह वैराग्य में अर्थात् घोर निराशा की ओर जाता है, किन्तु वहॉ भी उसमें किञ्चत मात्र अपना अहम्-तत्त्व विद्यमान रहता है. लेकिन जब उसे सत्-चित की जागृति हो जाती है तब निष्काम भगवद् अनुराग उत्पन्न हो जाता है.

अन्त में कहा जा सकता है-"सा विद्या या विमुक्तये" जो विद्या जीव को मुक्ति-पथ प्रशस्त करे वही सद् विद्या है जब यह प्राप्त हो जाती है तो आनन्द स्वमेव प्रकट हो जाता है क्योंकि यहॉ से "सर्वेभवन्तु सुखिनः" की भावना से ओत प्रोत प्राणी समद्रष्टा हो जाता है आज इसी शिक्षा की परम् आवश्यकता है.

वेद कहता है कि सब दिशाओं में हम किसी से द्वेष न करें और न कोई हमसे द्वेष करे. द्वेष या वैमनस्य ही घर, बाहर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा सांसारिक वैर विरोध की जड़ है. परस्पर द्वेष के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ. वर्तमान काल के विश्व युद्धों का मूल भी राष्ट्रों तथा समाजों का परस्पर वैरभाव है. इस बारे में-अर्थवेद(३/२७/१-६) के निम्न मंत्र द्रष्टव्य है-

०१ हे अग्निस्वरुप परमेश्वर! आप पूर्व दिशा के स्वामी है. आप बन्धन रहित और रक्षक हैं. हे जगत के स्वामी. आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं. हम आपके गुणों को नमस्कार करते हैं. जो कोई अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिस किसी से हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव को हम आपकी न्यायव्यवस्था रूपी मुख में रखते हैं.

०२ हे इन्द्र! आप हमारे दाहिनी ओर की दक्षिण दिशा के स्वामी है. आप तिर्यग योनियों के प्राणियों अर्थात कीट, पतंग, बिच्छू आदि टेढ़े चलने वाले अथवा दुष्ट प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं. माता-पिता और ज्ञानी लोग भी बाण के तुल्य हमारे रक्षक है. हम आपको पुनः पुनः नमन करते है. आगे पूर्ववत.....

०३ हे परमेश्वर! आप पश्चिम दिशा के स्वामी है. बड़े-२ अजगर तथा सर्प आदि विषधारियों से तथा अन्य हिंसाक प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं. भोज्यपदार्थ एवं औषधियां हमारी जीवन रक्षक हैं.

०४ हे शान्ति और आनन्ददायक परमेश्वर. आप उत्तर दिशा के स्वामी है. आप अजन्मा है, सबके रक्षक है.. .हम आपको इन गुणों के लिए नमस्कार करते हैं जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं.

०५ हे सर्वव्यापक परमेश्वर. आप नीचे की दिशा के स्वामी है. हम आपके रक्षक एवं जीवनदायक गुणों को नमस्कार करते हैं.

०६ हे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी. आप हमारे ऊपर की दिशा के स्वामी है. हे ज्ञानमय परमात्मा. आप हमारे रक्षक है. हम आपको आपके गुणों के लिए पुनः पुनः नमन करते हैं.

अर्थवेद (३/२७/१-६) के इन छह मंत्रो में बार-बार दोहराया गया है कि जो कोई हमसे द्वेष करता है, जिस किसी से हम द्वेष करते है, उस द्वेषभाव/वैर या वैमनस्य को हम आपकी न्याय-व्यवस्था पर छोड़ते हैं. इसी द्वेषभाव के कारण घर-परिवार हिंसा ग्रस्त हैं. परिवार में एक दूसरे की हत्या कर डालते हैं. आतंकवादी संगठन दुनिया भर में आतंक और हत्यायें फैला रहे हैं. राजनीतिक द्वेष एवं वैरभाव का उदाहरण इजरायल और फिलस्तीन हैं जहां कभी परस्पर वैर-वैमनस्य खत्म होने का नाम नहीं लेता. यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व में संसार के लोगों तथा राष्ट्रों में शान्ति, भाई-चारा, सद्भाव स्थापित करने के लिए लगा है किन्तु फिर भी राष्ट्रो में, विभिन्न समाजों में परस्पर द्वेष घृणा, वैरभाव जारी है. विकीलीकक्स के खुलासे के बाद विश्व में वैमनस्य बढ़ा है. अरब जगत में लोकतंत्र के लिए लड़ते लोगों का शासक दमन एवं उत्पीड़न कर रहा हैं.

इसलिए वेद ने इन मंत्रों (अर्थवेद (३/२७/१-६) में कहा है कि पूर्व दिशा, पश्चिम दिशा, उत्तर दिशा, दक्षिण दिशा, नीचे की दिशा और उपर की दिशा-इन सब दिशाओं में हमसे कोई द्वेष न करे और न ही हम किसी से द्वेष करें. वेद की यह उदात्त भावना देशकाल की सीमाओं से परे हैं. समस्त राष्ट्रो तथा समस्त मानव समाज के लिए है. उससे भी उपर समस्त दिशाओं के लिए हैं. जब चारों और द्वेष भाव/वैरभाव नहीं होगा तो सब ओर शान्ति, खुशहाली एवं सबकी समृद्धि होगी. समस्त धरती का, सब प्राणियों का कल्याण होगा. समस्त धरती एक परिवार है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह कथन तभी सार्थक होगा जब हम परस्पर द्वेषभाव को त्याग दें और एक दूसरे को प्रेम करें.

बेटी मैं पड़ोसी से प्यार करती हूं और उसके साथ भाग रही हूं.
बाप- थेंक यू मेरे पैसे और समय दोनों बच जायेंगें.
बेटी- मैं लेटर पढ रही हूं, जो मम्मी रख के गयी है

लड़की मंदिर में-हे भगवान किसी समझदार लड़के को मेरा ब्याज फ्रेंड बना दो.
भगवान-घर चली जा बेटी, समझदार कभी गर्ल फ्रेंड नहीं बनाते.
मो० ९३३५१३८३८२

खारी झील

✍ जेबा रशीद
१५१, चौपासनी चुंगी चौकी, जोधपुर-३४२००६, राजस्थान

घोर अंधेरी रात. वह प्लेटफार्म पर उतरा. अंधकार में खड़े अपने गांव के वृक्ष व मकान देख मन ही मन प्रसन्न होता घर की ओर बढ़ चला. आंधी भरी हवा जैसे उससे खेलने लगी. कभी चुप्पी साध कर वृक्षों के पीछे छिप जाती, तो कभी दुगुने वेग से नाचती-झूमती दौड़ पड़ती. शरारत से उसके मुंह पर मिट्‌टी के कण फेंक जाती. घर पहुंचने पर पत्नी व बेटे से मिलने की कल्पना का सुखद अनुभव हो रहा था.

माता-पिता की पसन्द उसे पसन्द आई. सांवला चेहरा..छोटा कद... दुबली -पतली..उसके दृढ़ता से सटे छोटे-छोटे होंठ. घर में पुत्र होने की खुशी भी उसे बांध न पाई. वह कमाई का बहाना बना महानगर चला गया. वहां से खाड़ी देश जा पहुंचा.

एक दुकान में नौकरी करने लगा. दुकान में आने-जाने वाले पुरुष ग्राहकों को वह शीघ्र निपटा देता. जबकि औरतों से घण्टों बातें करता. उनमें अधिकतर महिलाएं, घरेलू काम-काज करने वाली नौकरानियां आती थीं. उसकी दुकान मालिक की हिन्दुस्तानी बीबी से दोस्ती हो गई.

चौबीस वर्ष की तीखे नयन-नक्श वाली नूरी गजब की कशिश रखती थी. मां-बाप ने उसकी शादी एक बूढ़े अरबियन से पचास हजार रुपये लेकर कर दी थी. खाड़ी देश में आने के बाद उसे पता चला कि उसका पति एक दुकान का मालिक है. पहले भी दो शादियां कर रखी हैं. उसे घर में नौकरानी की जरुरत थी, जो बुढ़ापे में उसे बीबी बनाकर ले आया. एशियाई औरतों को यहां का मर्द केवल रोटी कपड़े से बांध रखता है. अनगिनत लड़कियां मां-बाप के लालच से दुल्हन बनाकर लाई जाती है. कई हालात से समझौता कर लेती हैं. कुछ छुप कर कुछ अन्य इन्तजाम कर लेती है.

“तुम मुझे अपना बनाना चाहते हो.. मेरी दोस्ती की एक शर्त है..तुम्हें कभी वापस अपने देश नहीं जाने दूंगी.”

“जाना ही कौन चाहता है.”

“मैं तुम्हारे घर सूचना भेज देती हूं कि तुम खुदा को प्यारे हो गए.” नूरी ने हंसते हुए कहा.

खुशी से दिन गुजरने लगे. समय गुजरता गया. अनीक ने देखा, नूरी स्वतन्त्र विचारों वाली औरत है. वह एक से बंध कर नहीं रहना चाहती. हर समय उस पर हावी रहती है. धीरे-धीरे उसका मन विद्रोह करने लगा. उसे अपना घर...अपनी पत्नी याद आने लगी. आखिर आठ वर्षो बाद वह नूरी से छुप कर भारत आने में कामयाब हो ही गया.

खुशी से दिन गुजरने लगे. समय गुजरता गया. अनीक ने देखा, नूरी स्वतन्त्र विचारों वाली औरत है. वह एक से बंध कर नहीं रहना चाहती. हर समय उस पर हावी रहती है.

उसे घर आना एक सपना सा लग रहा था. देर रात घर के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ. दरवाजा थपथपाया.

“तुम....तुम...”सुरैया दरवाजा खोलते ही चीख पड़ी.

“हां मैं...अरे तुम तो डर गई.” वह जोर से हंस पड़ा.

“तुम तो....तुम तो...”शब्द गले में फंस गए. वह कांप रही थी.

“अरे मैं जिन्दा हूं....वो खबर तो झूठी थी...यूं ही...”खुशी से चहकते हुए सुरैया के शरीर को अपनी बांहों में भर लिया. उसका गला रूंध गया. झीनी रोशनी के प्रकाश में वह उसे सुन्दर लगी. सुरैया का शरीर उसकी बाहों में काप रहा था.

उसका कोमल....उष्ण....कांपता शरीर. ...अनीक की बाहों में सिमटा हुआ था. प्रेम की तरलता में एक साथ. सुरैया ने खुद को छुड़ाना चाहा. उसने उसे अपनी बांहों में जकड़ लिया.

अपना घर....अपनी पत्नी...अपना मुंह पत्नी के कोमल कण्ठ से लगा लिया. आंसूओं की बूंदों से उसके गाल गीले होने लगे. “कौन है सुरैया.” अचानक भीतर से आते एक पुरुष पर अनीक की नजर ठहर गई. उसने पत्नी को जोर से धक्का दिया और क्रोध से पूछा “कौन है...यह?..आधी रात को घर में?”

सुरैया हक्की बक्की खड़ी कांप रही थी. दुबला-पतला सफेद पायजामा कुर्ता पहने युवक आश्चर्य से उन्हें देख रहा था. उसने बरामदे की बिजली जला दी. अनीक गुस्से से बदहवास हो नौजवान की तरफ झपटा.

“नहीं.” सुरैया जोर से चीख पड़ी. उसका दिमाग सुन्न हो गया.

“कौन है यह?”

वह निश्चय खड़ा निर्भयता से अनीक को देख रहा था. शोर सुनकर कुछ पड़ोसी आ गए. सभी को आश्चर्य हो रहा था. यह अचानक कैसे आ गया? यह आठ वर्ष कहां था. इसकी तो मृत्यु की सूचना आ गई थी. इस बीच कितना कुछ घट गया. इकलौते बेटे के गम में माता-पिता चल बसे. कुछ पड़ोसियों ने बताया...कुछ उसने समझा. उसे कुछ न सूझ रहा था. वह मूर्च्छित सा पलंग पर बैठ गया.

समीर सब समझ चुका था. उनको अकेला छोड़ दूसरे कमरे में जा सोफे

पर लेट गया. सुरैया घुटनों के ऊपर सिर टिकाए सिसक रही थी.

सुबह होने तक अनीक का मन और मस्तिष्क कुछ ठिकाने आ गया. वह चुपचाप आंगन में बैठा था. वह खुद को बेटे व पत्नी के प्रति अपराधी समझ रहा था. उसके दिल में उस समय समीर व सुरैया के प्रति जरा द्वेष भावना नहीं थी. "सुरैया कुछ खाने को दो....भूख लगी है." वह चाय नाश्ता बना लाई. अनीकने बड़े अधिकार से समीर को नाश्ता करने बुलाया. टेबल पर नाश्ता रखकर नीची नजर किए खड़ी थी. रो-रो कर सूज आई आंखे लाल हो रही थी. चेहरा पीला पड़ गया. "बैठो, तुम भी चाय लो" देखने में ऐसा लग रहा था, सब कुछ ठीक है पर तीनों के दिमाग में संघर्ष हो रहा था.

"समीर मेरी तुम से कोई दुश्मनी नहीं है......इस औरत का भी कोई कसूर नहीं.... होना था जो हो गया. अब तुम अपना इन्तजाम कहीं और जगह कर लो." अनीक ने अचानक कहा. सुरैया का चेहरा फक हो गया. मानो उसमें खून की एक बूंद भी न बची हो. "यह मेरा व तुम्हारा ही मामलाा नहीं है. सुरैया की इच्छा भी जान लो. .. "यह क्या चाहती है. समीर ने बड़े सधे हुए स्वर में कहते हुए सुरैया का हाथ पकड़ना चाहा. वह घबराकर पीछे हट गई.

"नहीं फैसला मैं करूंगा...मैं इसका पति हूं इसलिए यह मेरे साथ रहेगी. मेरा बच्चा मैं रखूंगा...तुम्हारा बेटा तुम ले जा सकते हो....चाहो तो इसे दे सकते हो." अनीक ने अपना निर्णय सुना दिया.

सुरैया ने चौंक कर एक लम्हा उसे देखा. उसे अनीक के लहजे पर विस्मय हुआ. उसके चेहरे पर अपमान की श्यामलता छा गई.

यह सत्य है. अनीक उसका पहला पति है. उसका पहला प्यार है. वह उसके प्रति अपराधबोध से घिरी थी. अपने फर्ज के आगे वह खुद को निर्बल अनुभव कर रही थी. वह निष्प्राण सी निश्चल बैठी रही. उसकी चुप्पी....मजबूरी देख समीर जाने की तैयारी करने लगा. सुरैया की आंखों के आगे अन्धेरा छा गया. उसका शरीर सिहर उठा. वह उसे जाता नहीं देख सकती...दोनों बच्चों को सीने से लगाए जड़वत बैठी रही. "बहुत मजबूरी में इसने समीर को रखा होगा." अनीक अपने दिल को तसल्ली दे रहा था.

जिसे कभी नहीं स्वीकार....मजबूरी से दो साल साथ रहा था. वह आज कितनी अपनी लग रही थी. उसे उदास देख मन उमड़ आया. पास जा उसे तसल्ली देने उसके कंधे पर हाथ रख दिया. सुरैया ने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया और सिसकने लगी. इतने वर्षो बाद पति का प्यार भरा स्पर्श...

"मेरे पास कोई चारा भी तो नहीं था. ..मैं अकेली क्या करती...सूचना भी तो ऐसी आ गई थी." वह धीरे-धीरे बुदबुदा रही थी.

सुरैया की आंखों से लग रहा था कि वह आन्तरिक पीड़ा से त्रस्त है. मन भीतर ही भीतर फटा जा रहा था. अपने लिए...बच्चों के लिए....पहले पति के प्रति...समीर के लिए.

"सब ठीक हो जायेगा." वह समझाने लगा.

"मैं तो कुछ भी नहीं कह रही." उसकी आंखों से मोती टपकने लगे. सुरैया को रोता देखा तो उसने सोचा समीर के चले जाने से रो रही है. उसका मन कड़वाहट से भर गया. उसके दिल में बार-बार खटक रहा था कि गलती तो मैंने की...वह सब एक मजाक समझ कर...पर नतीजा कितना बुरा निकला.

कई दिन बीत गए. वह कठिनाइयां और उलझनों में फंस कर रह गई थी. अनीक...सुरैया व समीर के बीच सम्बन्धों के बारे में सोच कर शान्ति नहीं पाता. कोई तू तू..मैं मैं नहीं खुशियां....उमंग भी नहीं. घर में एक तनाव भरी चुप्पी छाई रहती थी. वह उद्विग्न हो उठता.

वह उससे ठीक ढंग से बात न करता. वह कुछ पूछना....कुछ बोलना चाहती तो वह चिढ़ जाता. किसी न किसी बात को लेकर ताने देने लगता.

"क्या यही न्याय है?" अनीक को सुरैया आंखों में सवाल करती लगती. तन्हाई में उसे नूरी की याद आती. वह वहां की याद में छटपटाने लगता. वहां की फैली लम्बी-लम्बी सड़के...बाजार. .मन उड़कर वापस जाने को करता. कोई सुख नहीं...क्या इसलिए ही मैं घर वापस आया था?

सुरैया को गहरी पीड़ा थी कि निर्बल, अयोग्य और असमर्थ पत्नी सिद्ध कर पति उसे छोड़ गया था. मृत्यु पत्र आने के बाद उसने परेशानियां उठाई. इच्छाएं, आशाएं....भविष्य...सब समाप्त हो गया. उसने नौकरी कर ली.

साथ काम करने वाले समीर से परिचय हुआ. उस घर को परेशानी में देखकर एक कमरा किराये पर दे दिया. वह हाथ से खाना पकाता. सुरैया का नारी हृदय उसके प्रति संवेदना से पसीज गया. वह उसका भी खाना बनाने लगी.

दोनों साथ काम पर जाते. सांझ के समय साथ आते. सुरैया खाना बनाती. समीर सोनू से खेलता. साथ खाना खा अपने-अपने कमरे में जाकर सो जाते. पड़ोसी व साथ काम करने वाले बातें बनाते. "इस विधवा के लिए जहरीले धुंए जैसी बातें क्यों कर रहे हो? वैसे भी मुसीबत में दिन काट रही है..." एक दिन समीर से रहा नहीं गया. वह बातें बनाने वालों का सामना कर बैठा.

"तुम अपने घर में क्यों नहीं रख लेते. ..उसके बड़े हमदर्द बने फिरते हो." पड़ोसियों की बातें उसे तीर की तरह लगी. बातें और ताने..उसे चैन न लेने दे रहे थे. उसकी आत्मा कचोट रही थी कि सुरैया की बदनामी मेरी वजह से हो रही है.

इसको बचाना मेरा फर्ज है. आज तरह-तरह की कहानियों का अन्त होना ही चाहिए. वह आपे से बाहर हो गया. झटके से उठा और उसके सामने जा खड़ा हुआ. समीर के चेहरे पर न क्रोध था न घबड़ाहट. एक अजीब तरह का भाव था. सबके सामने समीर ने उसका हाथ पकड़ कर कहा...आज से हम पति-पत्नी है.

वह हक्की-बक्की रह गई. उसके होंठ कांपे. शब्द अन्दर ही घुट कर रह गए. सुरैया बैठी शून्य में देखती रही. मन बोल उठा, "क्या लिख पढ़ रही हो आकाश में...नई जिन्दगी के दस्तावेज. .अपना लो नई जिन्दगी."

सुख के दिन...जिन्दगी संवरने लगी. एक और पुत्र पा वह निहाल हो गई. समीर की निकटता और प्यार सुरैया के लिए कितने संतोष की बात थी. सुख के दिनों की उम्र छोटी निकली. अचानक अनीक आ गया. सब कुछ बदल गया.

दोनों की चुप्पी इसलिए भी थी कि दिनोदिन बलवती होती ईर्ष्या के कारण अनीक सुरैया की हर बात का उल्टा अर्थ लगाता था.

सामने खिड़की से अनीक को स्कूल से लौटती सुरैया नजर आई. चिन्ता में डूबी चली आ रही थी. उलझनों ने उसके चेहरे और मन को झुलसा दिया. वह पत्थर की तराशी हुई मूर्ति लग रही थी. उसका मुरझाया चेहरा और चुप्पी देख अनीफ को क्रोध आ गया.

"पति जिन्दा लौट आया है और यह मुर्दा बनी घूम रही है..जबकि मैंने इसे कह दिया जो हुआ सो हुआ. तुम्हारा अपराध मैंने माफ कर दिया."

वह सोचता उसे अपना कसूर मानना चाहिए कि वह पर पुरुष के साथ रहती रही. फलस्वरुप उसके व्यवहार में अधिकाधिक निष्ठुरता आ गई.

अन्तरात्मा की पीड़ा समेटे खिड़की के पास जा खड़ी हुई. अनीक का व्यवहार देख सुरैया के दिल में छाले पड़ रहे थे और दिल में समीर के लिए छिपी चाह की टीस उभर आती. जिस वस्तु पर नजर पड़ती समीर की याद ताजा हो जाती. निरन्तर सुलगती याद ज्वाला की तरह भभक उठती.

प्रकाश खिड़की की राह आकर दीवार पर चित्रकारी कर रहा था. थकावट.. उत्तेजना और क्रोध के कारण उसका सिर चकरा रहा था.

सुरैया समीर की कमीज हाथ में ले, उसे गाल से लगाए आंखें बन्द किए बैठी थी. उसने धीरे से नाम पुकारा समीर.. समीर..उसे संतोष मिल रहा था.

"समीर...समीर.."वह बेचैन हो गई. यह नाम पुकारे उसे कितने दिन हो गए. आंखें बन्द किये बैठी रही. रात की निस्तब्धता...आंखों से मोती टपकने लगे.

"अंधेरे में क्या हो रहा है."अन्दर आते हुए अनीक ने पूछा.

"कुछ नहीं...यूं हीं." घबरा कर उसने जवाब दिया.

उसकी गीली पलकें...सहमी हुई आंखें देख अनीक की आंखों में एक दम घृणा भड़क उठी. उसका कंधा पकड़ कर झटके से सुरैया का मुंह अपनी ओर करते हुए बोला."अपने यार का गम मना रही हैं."

उसके असंयमित उद्वेग से वह सिहर उठी...पर चुपचाप बर्दाश्त भी कर लेती. खिन्नता और क्रोध का बोझ अनीक को दबाए हुए था. खुद से गलती हुई....इसका उसे एहसास भी था. फिर भी दोष सुरैया पर देना चाहता था. वह यह भी सोचता कि सुरैया का कोई दोष नहीं है फिर भी जलन..

इसके एक इशारे पर मैंने समीर को हृदय और जिन्दगी से दूर कर दिया फिर भी यह मुझे निरादर की दृष्टि से देखता है. मैं कैसे कहूं कि तुम्हारे इस व्यवहार से मुझ पर क्या गुजरती है. वह आंखें बन्द किये पलंग पर लेटी रही. स्वप्निल अवस्था में उसे मौसी का चेहरा याद आया.

"यह खारा पानी है....गरम-गरम... इसमें तुम डूब नहीं सकती...कोई नहीं डूब सकता. खुद को आंसुओं में मत डुबोओं." मैं नहीं रह सकती ऐसे आदमी के साथ मौसी....उसकी आंखों के आगे नीले-नीले मोती चमकने लगे. "मैंने अपने पति के हाथों इससे अधिक सहाहै, लेकिन मुंह पर ताला पड़ा रहा. कभी किसी से शिकवा शिकायत न की."

मौसी ने अपनी सारी उम्र शराबी पति के साथ गुजारी थी. उसे कभी ख्याल ही नहीं आया कि वह उसे छोड़ कर अलग हो जाए. मौसी की सुरैया का पति को छोड़कर अलग होने की बात बदनामी लगी.

"अब जमाना और है...अब वैसी बात नहीं चल सकती. मैं अपने मन की मालिक हूं...या तो वह मेरे साथ भले आदमी की तरह रहे, नहीं तो मैं उसके साथ नहीं रहूंगी."

मौसी ने भी कुछ सोचा. सोचते-सोचते उन्हें अपने पति पर क्रोध आने लगा. उसे भी लगा यह ठीक ही तो कह रही है. क्यों सहे यह इतना? मैं जो न कर सकी, उसे इसे करना चाहिए.

सुरैया समझ चुकी थी कि अब इसके दिल में केवल ईर्ष्या है. अपनत्व नहीं रह गया है. यह दूरियां और मन मुटाव उसके लिए असह्य हो गया. अनीक के पास जा शान्त स्वर में बोली, "इस तरह जिन्दगी से क्या

फायदा? हम दोनों के लिए जिन्दगी भार हो गई है."

"तुम ठीक क्यों नहीं रहती." सब कसूर उस पर थोपते हुए कहा, "तुम जानते हो सब कसूर मेरा है..कोई बात नहीं...मान लेती हूं. क्या तुम पिछली बातें भूल जाओगे."

"आपने उसे अपने घर से निकाल दिया. मुझे भी निकाल देते."वह धीरे-धीरे बोल रही थी.

"मेरे दो हिस्से कर देते...मुझे बांट देते. तुम तो मुझे इन्सान नहीं वस्तु ही तो समझते रहे हो. तुमने मुझे समझने की कभी कोशिश की होती." अपने आंसू पोंछते हुए सुरैया बोली, "तुम तो केवल नर और मादा का रिश्ता रखने वाले....मैं इन्सान हूं....तुम्हारे दिल में थोड़ी दया होती है और मुझे तसल्ली के दो शब्द कहे होते....मैं सब कुछ भूल जाती. मैं अपनी भावनाओं पर काबू पा लेती....पर तुम तो मुझे अपराधी मानते हो. मेरा अपराध कहां है?" सुरैया की आवाज में धीरे-धीरे क्रोध आने लगा.

"मैं मन से कभी उसे याद नहीं रखना चाहती थी पर तुम मुझे रोज-रोज उसका नाम लेकर...ताने देकर...उसे याद करने पर जबरदस्ती मजबूर कर देते हो. तुम उसे भूल नहीं पाते और मुझे भी भूलने नहीं देते. उसे याद करने के लिए तुमने मुझे मजबूर किया...तुमने" वह क्रोध से चीख उठी. फफक-फफक कर रोने लगी. काश मैं तुम्हें बता पाती कि मेरे मन पर क्या-क्या गुजर रही है. तुम अपनी गलतियों और उन कड़ियों को समझ पाते जिनसे मैं जुड़ी हूं. काश मैं बता पाती कि इस तरह नहीं रह सकती. न उसके पास न तुम्हारे पास. मेरे भाग्य ने छल किया है. मैं कहां जाऊं..ओह किसी एक के साथ रहूंगी तो दूसरा याद आएगा. क्या यह झेलना मेरे बस की बात है? मैं क्या करूं?

उसके दिमाग में घर की...बच्चों की चिन्ता उथल-पुथल मचाए थी. पारिवारिक झगड़ा अब मन पर भारी पत्थर की तरह रखा लग रहा हैं.

उसे रोता-देख अनीक को क्रोध आ गया. सुरैया को धक्का देते हुए क्रोध से बोला "चली जाओ....तुम उसके पास...चली जाओ."

"हां मैं जा रही हूं...उसके पास भी नहीं जा रहीं हूं. अगर मैं उसके पास रहूंगी तो तुम्हारी याद में डूबी रहूंगी. तुम्हारे पास रहने पर उसकी याद में. मैं इस तरह नहीं रह सकती. न तुम्हारे पास...न उसके पास!" वह उठ खड़ी हुई.

"घाव तभी भरते हैं जब उन्हें बार-बार कुरेदा न जाए."

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़े, बल्कि दूसरे दोस्तों को भी इससे परिचित कराएं.

२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएं भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएं पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुई या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर अपनी मौलिकता व अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जबाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती है.

३. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

५.जो रचनाएं आपको अच्छी लगें उसके साथ रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

७. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक क्रांति लाने की मार्ग दर्शक है. इसे हर सम्भव सहयोग प्रदान करें.

❑संपादक

आदरणीय द्विवेदीजी, सादर नमन्
पत्रिका का दिसम्बर अंक मिला. पत्रिका को पढ़ा. पत्रिका में आज की राजनीति पर करारा चांटा लेखों के माध्यम से आजकल के नेताओं पर कसा गया है. लेकिन हमारे माननीय नेतागण, मंत्रीगण सभी इस कदर भ्रष्टाचार, दादागिरी में डूबे रहते हैं कि उन पर इन बातों का कोई भी असर नहीं होता. संसद की मर्यादा कई बार इन भ्रष्ट नेताओं ने तार-तार की है. ऐसे नेताओं की इज्जत कब तार-तार होगी. मुझे उस वक्त का बेसब्री से इन्तजार है. ईश्वर करे वह दिन मुझे इसी जन्म मे देखने को मिले.
डॉ. ओमप्रकाश हयारण'दर्द', ३२०, सी.पी.मिशन कम्पाउण्ड, झांसी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदीजी, सादर हरिस्मरण!
पत्रिका का अंक मिला. हिन्दी सेवा के लिए कोटि-कोटि बधाई. यह पत्रिका हिन्दी साहित्य में गागर में सागर सी प्रतीत हो रही है. मैं आशा करूंगा कि भाषा की सेवा निरन्तर करते रहेंगें.
मुन्ना 'मोहन', गली नं.५, श्रीराम कॉलोनी, २४ गुना, म.प्र.

++++++++++++++++++++++

नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ० विनय मालवीय,इलाहाबाद

+++++++++++++++++++++++

नववर्ष की आपकों एवम समस्त पत्रिका परिवार से जुड़े लोगों को हार्दिक शुभकामनायें. यह वर्ष श्रेष्ठ, उन्नत, आदर्शमय एवं गरिमामय बना रहे. शुभकामनाओं के साथ.
हेमा उनियाल, ८/५५०, लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली-०३

++++++++++++++++++++++++

श्रीमान गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी
हार्दिक अभिवन्दनम्-नमस्कार
पत्रिका का एक अंक मिला. यह पत्रिका साहित्य के क्षेत्र में अच्छी, ज्ञानवर्धक और विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित पत्रिका है. किंतु जैसा की यह 'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान' की पत्रिका है, फिर भी इतनी प्रतिष्ठित संस्थान की पत्रिका का स्तर जितना रोचक और प्रभावशाली होना चाहिए था. नहीं है? पत्रिका के विषय में गहराई से अध यन-चिंतन मनन करने से ऐसा लगा कि पत्रिका की अनेक योजनाएं हैं. आपने इस अंक में भ्रष्टाचार विषय को उठाने का प्रयास किया है. यह एक सराहनीय शुरुआत तो है. समय और देश को इस मददों पर काफी कुछ मार्गदर्शन की जरुरत है. आज जो देश में भयंकर भ्रष्टाचार और अपराधीकरण व्याप्त है. वह भ्रष्ट जनप्रतिनिधियों की नीति-प्रवृत्तियों के कारण ही है. इसके लिए देश की राजनीति व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन कर और भारतीय संविधान के कुछ प्रावधानों में संशोधन करके किया जा सकता है. देश में केवल सशक्त लोकपाल या लोकायुक्त विधेयक लागू कर देने मात्र से भ्रष्टाचार का समाधान संभव नहीं है.
डॉ० अरुण कुमार आनन्द, ६७५, बृज नगर, सीता रोड़, चन्दौसी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

परमादरणीय सम्माननीय द्विवेदी जी,
सहृदय नमन!
'कुशलोपरान्त' आपके कुशलतम सुनिर्देशन में सम्पादित पत्रिका का अंक प्राप्त करने का सुअवसर मिला. पत्रिका के सफलतम सम्पादन हेतु हार्दिक बधाई.
साहित्यसेवी श्री द्विवेदीजी, पत्रिका का जैसा नाम 'विश्व स्नेह समाज' ऐसी उत्कृष्ट स्तरीय साहित्यिकता से पूरित भी है जो वास्तव में सम्पूर्ण संसार को स्नेहमय बन्धन में पिरोने मे सक्षम है. यह साहित्यिक क्रियाओं से ऐसे महान समाज की स्थापना करने मे समर्थ प्रतीत हो रही है, जो शब्द ब्रह्म के प्रभाव से सबमें राष्ट्रप्रेम के साथ-२ विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रवाहित कर रही है. ऐसे महानतम साहित्यिक प्रयास हेतु हमारा साधुवाद अवश्य स्वीकारें.
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल' , नन्दादेवी बायोस्फियर रिजर्व, गोपेश्वर, चमोली, उत्तरखंड-०१

++++++++++++++++++++++++

श्रद्धेय मान्यवर
नयी सदी की राह में, बीते ग्यारह वर्ष
बारहवां है द्वार पर, लिये नवल उत्कर्ष
नये वर्ष में हो सदा, नया हर्ष उल्लास
बना रहे सुख सर्वदा, बन्धु आपके पास
कभी न टूटे प्रीतिक की, यह मुंहमांगी डोर
सांझ आरती से सजे, भजन प्रभावी भोर
हरी-भरी तुलसी रहे, अंगनाई के बीच
नेह-सिन्धु सूखे नहीं, दोनों हाथ उलीच
करें प्रार्थना ईश से, बना रहे आनन्द
सुयश-प्रसिद्धि अपूर्व हो, उतरें अनुपम छन्द
सुदृढ़ सभ्यता-संस्कृति, मानवता का राग
कोष न मन का रिक्त हो, बना रहे अनुराग
गृह मंदिर मे हो सदा, सुख समृद्धि-श्रीवास
रोग-शोक चिन्ता सहित पीड़ा करे प्रवास
अपनेपन की सुरभि में, रहे मधुर संवाद
अन्तर से न विलुप्त हो, मधुकर की भी याद
मधुकर अष्ठाना, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++

आदरणीय गोकुलेश्वर जी सादर प्रणाम
नया वर्ष दे आपको अभिनय उत्कर्ष
मंगलमय मधुमय जीवन हो जिये सुखी सौ वर्ष
तन में हो ताकत, मन से हो प्रबल,
आत्म विश्वास, निजश्रम बल से रचे प्रगति का गौरवमय इतिहास।
एस.बी.मुरकुटे, २क्रास, बड़गांव, बेलगावं-५ कर्नाटक

++++++++++++++++++++++++

लोकप्रिय पत्रिका का जनवरी अंक मिला. पढ़कर अति प्रसन्नता हुई. स्थायी स्तम्भ वाकई सराहनीय है. आपकी कर्मठ, नेक, निर्भिक, साहित्य लेखनी को प्रणाम. यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़कर बुलंदियों को छुएगी. इसके लिए हम आशान्वित है. **नेमीचंद पूनिया 'चंदन'**, ४१, भलावतों का बास, भैरुघाट, पाली मारवाड़, राजस्थान

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. 'शिक्षा का मंदिर या लूट का अड्डा?' तथा शिक्षाः ज्ञान का मंदिर या व्यवसाय' मन को झकझोरता तो है किन्तु यक्ष प्रश्न है कि इस अन्धेरे को देखने एवं सहने के बाद भी बुद्धिजीवियों की बुद्धि को लकवा मारे हुए है. विडम्बना है कि इस दुव्यवस्था के प्रति जन संगठन बनाने एवं आन्दोलन करते हेतु इन तथाकथित बुद्धिजीवियों के पास समय का एक पल तो दूर प्रतिपल भी नहीं है. जनान्दोलन के बीजारोपण हेतु उनकी लेखनी में स्याही की एक बूंद भी नहीं हैं. भ्रष्टाचार कारण एवं निवारण पढ़ा. सोचता हूं किसी ने उसके लेख्क डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल' के पास अभी तक एक माला भी भेज दिया होता तो शायद वे मालाजाप कर निवारण कर देते. 'दिल्ली के दरवाजे पर परमाणु पागलपन' में डॉ० सौम्य दत्त जी की पीड़ा देखा. इन मौन बुद्धिजीवियों को कोटिशः नमन.
विद्याधर पाण्डेय, १६०१, गौर ग्लोबल विलेज, क्रासिंग, राष्ट्रीय राजमार्ग-२४, गाजियाबाद, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++

६वें साहित्य मेला की सफलता की हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ० सरोज गुप्ता-आगरा, महेन्द्र जोशी, प्रो. डॉ. हीरालाल जायसवाल 'हीरा'-गोंदिया, महाराष्ट्र, यशोधरा यादव-आगरा

मेहनताना

✍ संतोष शर्मा 'शान'
जन्मः १६.०४.१९७४
विधाः कहानी, कविता, गीत, ग़ज़ल एवं आलेख
रूचिःसाहित्य लेखन व पठन, संगीतव बैडमिंटन
सम्पर्कः ग्राम-सूरतपुर, पो० मैंडू, हाथरसा, उ.प्र.

फागुन का महीना चल रहा था. गांवों में आलूकी खुदाई जोरों से चल रही थी. ट्रैक्टर से आलू की खुदाई में बीनने-छांटने वालों को अच्छा खासा मेहनताना मिल रहा था. जिनमें कुछ ग्रामीण व गरीब बच्चे भी शामिल थे.

बीरो बोला-'भोला! ठाकुर साहब के आलू खुद रहे है चलोगे क्या....?'

भोला के कुछ कहने से पहले अम्मा बोल पड़ी. "हां-हां! इसे भी लिवा जा बेटा! कछू तो पैसा पल्ले पड़ेगें रे..!"

बीरो ने तपाक से कहा-"नहीं, नहीं ताई! पूरे बीस रुपये देवेगी ठकुरानी और साग को आलू सो अलग...."

अम्मा-अच्छा! तो लिवा जा..जा!

भोला बीरो के साथ-साथ आलू खोदने ट्रैक्टर के पीछे-पीछे भाग-भाग कर शाम तक आलू बिनवाये' जब शाम को सभी को मजूरी मिली तो ठाकुर ने भोला को थोड़े से आलू व दस रुपये का नोट थमा दिया.

भोला मासूमियत से बोतला, "ई का ठाकुर साहब! दस रुपया! मैं तो बीस की मजूर पर लगा था..?" भोला की बात सुनकर ठाकुर की त्योरी चढ़ गई. "अच्छा! बीस रुपया...बीस के नोट जैसा काम भी किया है तूने... चल भाग यहां से."

उधर मुखिया जी भोला को फटकारते हुए ठाकुर को देर से अपने खेत के मेड़ पर खड़े देख रहे थे बोले, "अरे ठाकुर! दे भी दो! सुबह से बेचारा बड़ी मेहनत कर रहा है."

ठाकुर-अरे जाओ मुखिया...ये सीख हमें ना दो? दूसरे हफ्ते जब मुखिया जी के आलुओं की खुदाई हुई तो बिना कुछ कहे-सुने भोला खुशी-खुशी उनके खेत में ट्रैक्टर के पीछे भाग-भाग कर उचक-उचक कर आलू बिनवाये. जब शाम को मजूरी का समय आया तो भोला ने भी सिर से अंगोछा खोल सभी की तरह नीचे बिछा दिया. सबसे अंत में उसे आलू दिया गया. मुखिया-ले बेटा देख! मैं तो तुझे आलू भी ज्यादा दे रहा हूं. कहते उन्होंने कटे-छंटे आलू भोला के अंगोछे में धर दिये.

कटे-छंटे आलुओं को भी देख और पा कर भोला संतुष्टि में मुस्कुराने लगा किन्तु जैसे ही दस का नोट उसे थमाया गया वह आश्चर्य में पड़ गया.

वह बोला "मुखिया जी...आपने तो.." भोला की बात बीच में काट ठाकुर जो अपने खेत की जुताई पास ही कर रहे थे बोले-"अरे मुखिया! बेचारा....कम से कम मजूरी तो पूरी दे दो..."

मुखिया-"अरे रहने भी दो ठाकुर...! आये बड़े बेचारा...मेरे पैसे क्या हराम के हैं जो बांटता फिरूँ....?"

ठाकुर-अच्छा! तो हमारे पैसे थे हराम के जो....

मुखिया-अरे हो ना हो..मुझे क्या..पर दिये तो तुमनपे भी पूरे नहीं थें..

ठाकुर-नहीं दिये...पर तरफदारी तो तुम ही कर रहे थे...अब तुम्हीं क्यों नहीं दे देते...?

इस तरह भोला के मेहनताने को लेकर दोनों में काफी कहा सुनी होने लगी. यह देख भोला को आश्चर्य हुआ कि बात उसके अपने मेहनताने की है और ...भोला की आंखें अंगोछे में धरे भरे छंटे आलुओं की तरह इन बौहरों की विचारधारा जो कि इन्हीं आलुओं से मेल खा रही थी स्पष्ट देख रहा था.

वह कुछ देर चुपचाप खड़ा देखता रहा फिर आलुओं को अंगोछे में समेट और मुट्ठी में दस का नोट थामे घर की ओर चल दिया.

जो खुशी, जो चमक उसके चेहरे पर सुबह थी वह आंखों में अब थकान का रूप ले चुकी थी.

उसकी मासूम आँखों में अगर कुछ दिखाई दे रहे थे तो वे थे कुछ निरुत्तर प्रश्न...

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाएं

लड़की के टी-शर्ट पर बने एरोप्लेन को लड़का घूरने लगा.
लड़की-कभी ऐरोप्लेन नहीं देखा क्या?
लड़का-ऐरोप्लेन तो देखा है...पर मां कसम ऐसा एयरपोर्ट नहीं देखा.

++

मोबाइल बना हर लड़की की शान,
मिस काल करके लड़को को करती है परेशान, एसएमएस में लिखती है 'आई मिस यू मेरी जान, तुम्हारी आवाज सुनने को तरसे है मेरा कान।

++

फासलों ने दिल की तड़प को और बढ़ा दिया, आज आपकी याद ने बेहिसाब रुला दिया, आपको शिकवा है कि हमें आपकी याद नहीं आती और हमने आपकी याद में खुद को भुला दिया

मो० ०८९५७१२४४९०

माफ़ी

✍ शबनम शर्मा,
नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, हि.प्र.

रवीना की शादी को सात बरस हो गये हैं. वह हमारे ऑफिस में काम करती है. उसके पास दो छोटे-छोटे बच्चे हैं. मनमुटाव के कारण तीन साल पहले पति-पत्नि में तलाक हो गया था. तलाक का मुख्य कारण सास की नाज़ायज दखलअंदाजी थी. रवीना एक अच्छी लड़की थी. मेरे साथ उसके संबंध शुरु से ही काफी मधुर हैं. उसका व्यवहार सबके साथ संतुलन भरा है. उसके बड़े बेटे का जन्मदिन था, उसने सबको मिठाई बाँटी. दोपहर में भोजन करने वो मेरी मेज़ पर आ गई. खाना खाने के बाद मैंने उससे पूछा, ''रवीना, तुम दूसरी शादी क्यूँ नहीं कर लेती.'' वह बोली, ''मैम, एक शादी से ही मन भर गया. अब और नहीं, ये बच्चे पल जाएँ, इनके लिए ही ज़िन्दगी है. पर आपको एक बात बताऊँ कि कमल को अपनी गलती पर बहुत पछतावा है. बार-बार मुझे संदेश भेज रहा है कि वापस आ जा, पर मेरा मन अब उस घर में जाने को मन नहीं करता.'' मैंने उसे कहा, ''देख रवीना, अपने पीहर में भी कब तक बैठोगी, तुम्हारी भाभियाँ आएँगी, फिर माँ-बाप भी सारी उमर नहीं बैठे रहते. इन्सान भी समय-समय पर बदलता है. अगर आज की तारीख में तुम्हारे पति के दिल में पछतावा है तो तुम उसे माफ़ कर दो व पुराने दिनों को भूल जाओ. इससे तुम्हारे बच्चों को बाप का प्यार तो मिलेगा ही, साथ में तुम्हारा बुढ़ापा भी आसानी से कठ जाएगा. आज की तारीक में तुम अपना नहीं बच्चों का सोचो.'' वह रोने लगी पर शाम को मैंने देखा वह अपने पति को फोन लगा रही थी.

बरबादी

पिंकी की शादी हुए अभी १० महीने ही हुए थे कि उसने घर में बवाल उठाना शुरु कर दिया. असल वो लड़की दूसरे प्रॉंत से आई थी. उसकी भाषा, वेशभूषा, खान-पान सब अलग थे व हर रोज़ उसके पीहर से फोन आते रहते. महीने में ३-४ बार वो अपने मायके चली जाती. फिर १ दिन के लिए जाती तो ५-६ दिन लगाकर आती. घर में इस बात को लेकर क्लेश रहने लगा. सबने उसे समझाया पर बात उसके पल्ले न पड़ी. इस बात का फ़ायदा उसके ही घर में पिंकी के ताऊ ने उठा लिया. उसने उसे ससुराल से तलाक लेने को उकसाया और उसके लिये अच्छी-खासी प्लानिंग भी बना डाली. अखबारों में निकलवा दिया और दहेज व साथ में १० लाख रूपये खर्चे की माँग भी करवा दी. पंचायत में तलाक हो गया. लड़के वालों ने सब सामान, पैसे लौटा दिये. पिंकी के घर जश्न-सा मनाया जा रहा था. उन्होंने तो जैसे कोई किला फतेह कर लिया हो. सन्तो ताई को जब इस बात का पता चला तो वो भी उनके घर गई. सारी बात ध्यान से सुनी व बोली, ''ओ भाई, ये जश्न क्या मना रहा है, पैसा ही सब कुछ नहीं होता, मुझे बता अब तेरी इस छोरी को १०-१० कोस के गाँव तक ले जाएगा कौन? जिसे तूने इस तरह माँड दिया.'' उसकी बात सुनकर पिंकी की माँ सकते में आ गई.

फार्म IV(देखिए नियम-८)

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के स्वामीत्व और अन्य विवरण जो केन्द्रीय धारा १९५६ के अन्तर्गत समाचार पत्रों के पंजीयक के लिये प्रकाशित करना आवश्यक हैः-

प्रकाशन का स्थान	- इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
प्रकाशन की अवधि	- मासिक
मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी का नाम	- गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	-एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.
प्रकाशन	-एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एतद् द्वरा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सही हैं.

हस्ताक्षर

१ मार्च २०१२ — गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

डॉ० पाठक को जीन्द रत्न व विद्यावाचस्पति

जीन्द. रवीन्द्र ज्योति मासिक के संपादक डॉ० केवल कृष्ण पाठक को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा 'जीन्द रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया. इसके अतिरिक्त विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा उज्जैन में आयोजित समारोह में सृजनशील लेखन मे विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

अनिल शर्मा को 'विद्यासागर' उपाधि

धामपुर. युवा साहित्यकार डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल' को विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए 'विद्यासागर' की उपाधि से अलंकृत किया. उनकी इस उपलब्धि प नगर और क्षेत्र के साहित्यप्रेमियों ने उन्हें बधाई देते हुए हर्ष व्यक्त किया है.

डॉ० तारा सिंह को विवेकानन्द अवार्ड

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियेंटल हेरिटेज, कोलकाता द्वारा ३५वें वार्षिक समारोह में स्वामी विवेकानन्द के १५०वीं जयन्ती के अवसर पर मुम्बई की वरिष्ठ साहित्यकार एवं स्वर्ग विभा की संस्थापिका डॉ० तारा सिंह को उनकी सुदीर्घ हिन्दी साहित्य सेवा तथा अभूतपूर्व उपलब्धियों के लिये 'स्वामी विवेकानन्द अवार्ड-२०१२' से नवाजा. यह सम्मान उन्हें त्रिपुरा के राज्यपाल डॉ. डी.वाई. पाटिल ने प्रदान किया. इस बीच सत्कर्मी यशाश्रित सेवा भावी हिन्दी संस्थान, महाराष्ट्र द्वारा 'साहित्य रत्न' उपाधि से विभूषित किया गया. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

विभाजी को ओजस्विनी कवयित्री सम्मान

भोपाल. म.प्र.हिन्दी लेखिका संघ, भोपाल द्वारा १७वें वार्षिक सम्मान समारोह जो स्व. विष्णु प्रभाकर की जन्मशती को समर्पित था में इलाहाबाद की प्रसिद्ध कवयित्री एवं लेखिका श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा को ओजस्वनी लेखिका सम्मान से विभूषित किया गया. सम्मान के साथ पांच हजार रुपये की सम्मान राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट किये गये. यह सम्मान मंच पर आसीन श्रीमती मालती जोशी, श्री कैलाश चन्द्र पन्त, श्रीमती सुघा मलैया, डॉ०निशा दुबे, श्री रमांकात दुबे एवं म.प्र. लेखिका संघ की अध्यक्ष श्रीमती उषा जायसवाल ने प्रदान किये. इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में स्व.विष्णु प्रभाकर जी जन्मशती पर विद्वान वक्ताओं ने स्मरण किया. जिनमें प्रमुख थी श्रीमती मालती जोशी, श्रीमती उषा जायसवाल, विजय लक्ष्मी विभा एवं श्री कैलाश चन्द्र पंत.

विभाजी के कृतित्व पर शोध प्रबंध

प्रसिद्ध कवयित्री, लेखिका, कथाकार श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा के पद संग्रह 'अंखिया पानी पानी' पर शोध छात्रा सुश्री नलिनी शर्मा, इंदौर ने शोध प्रबंध प्रसिद्ध कवयित्री एवं लेखिका प्रो. डॉ. पद्मा सिंह के निर्देशन में लिखा गया है. इस शोध प्रबंध में सन्निहित प्रेम और दर्शन के स्वरुप को विस्तार से रेखांकित किया गया है.

मुख्यमंत्री को 'मूषक पुराण' की प्रति भेंट

जयपुर. हास्य-व्यंग्य रचनाकार एवं चित्रकार श्री मनोहर लाल हर्ष ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अपनी हास्य-व्यंग्य काव्य पुस्तक 'मूषक पुराण' की प्रति भेंट की। इस पुस्तक में हास्य रस की ८५ कविताएं है. साथ ही उन्होंने इसके कवर सहित इसमें प्रकाशित रंगीन चित्रों को भी स्वयं बनाया है. उक्त जानकारी मनोहर लाल हर्ष ने दी.

सुश्री सुरेखा शर्मा को महिला बाल साहित्य रत्न सम्मान

सुरेखा शर्मा को सम्मानित करती हुई डॉ०महाश्वेता चतुर्वेदी

गुड़गांव. हिन्दी व संस्कृत की अध्यापिका सुरेखा शर्मा को हिमाक्षरा राष्ट्रीय साहित्य परिषद वर्धा द्वारा आयोजित समारोह पूना में 'नारी गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया. इण्डो-नेपाल महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन खटीमा, उत्तराखंड एवं नेपाल-भारत साहित्यकार मिलन कार्यक्रम में 'महिला बाल साहित्यकार रत्न' सम्मान से सम्मानित किया गया. जिसकी अध्यक्षता डॉ० सविता मोहन-निदेशक, भाषा संस्थान, उत्तराखंड सरकार, एवं डॉ० राम निवास मानव जी ने की.

स्वर लहरियां

‘स्वर लहरियां’ श्रीमती प्रोमिला भारद्वाज का प्रथम काव्य संग्रह हैं. इस काव्य संग्रह में संग्रहीत कविताएं विश्वशान्ति, सर्वजनहिताए, सर्वव्यापकता का दृष्टिकोण, आत्मिक-आध्यात्मिक शान्ति की सदाबहार बयार, पर्यावरण, कन्या भ्रूण हत्या, तन-मन-बुद्धि-विवेक-आत्म सभी का समुचित संतुलित समाहार ये सभी दृष्टिकोण उनके काव्य-कर्म को ऐसी सामयिक गतिशीलता प्रदान करते हैं जो कालान्तर सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी. मानवीय जीवन की निरन्तर गतिशीलता की कामना से ओत-प्रोत ये कविताएं जीवन के सुख दुःख का सम्मिश्रण एवं धूप-छांव का ताना-बाना है. उतर आधुनिक एवं वैश्वीकरण के इस युग में अन्धधुन्ध विकास की रफ्तार के साथ नैतिक मूल्यों के पतन की ओर लड़खड़ाते मानव के कदमों को रोकने की राह दिखाती कविताएं मानव में असम्भव को सम्भव कर दिखाने की जज्बा भरने में सक्षम दिख पड़ती है. समाज की कथनी व करनी में अंतर, स्वार्थपरायनता, वृद्धों की दयनीय स्थिति, नारी शोषण, ब्रहांड में परमशक्ति के महान्ता को स्वीकार करती प्रोमिला भारद्वाज का यह काव्य संग्रह व्याकरण की दृष्टि से समुचित समय के घिनौने सत्यों का ईमानदारी से बखान करता हुआ अपनी वैचारिक व रचनात्मक ऊर्जा से नई राहों के अन्वेषण का दम भरता है. ९६ कविताओं के इस संग्रह में कवयित्री अलौकिक, आध्यात्मिक आंतरिक सोच को भरने में सार्थक है. उदाहरणार्थ-

जीवन है ये तपोवन,/तपोवन में भटक रहा तन,/तन में नित भटक रहा मन,/मन में तृप्ति पाने की धुन,/धुन पे थिरके हर हृदय की धड़कन/जीवन है ये एक तपोवन, तपोवन में भटक रहा तन!

पूरी कविता में वह भटकाव से बाहर आकर जीवन की गहराई में उतर कर कुछ और सृजन की पिपासा में डूबकर सृजन का बस एक क्षण देखने को आतुर यूं कहती है-

एक बार बस, एक बार/देखना चाहूं/सृजन का क्रम/चलता रहता निरन्तर/बह जाना चाहूं उस संग जानूं क्या है सृजन/सृजन के क्षण।

धरती पर देवलोक के दर्शन कराने का आतुर ये पंक्तियां वास्तव में भी जान भरने को आमदा है-

सुन, ऐ मन! सुन,/ब्रहाण्ड में गूंजती स्वर लहरियां,/रून-झुन, रून-झुन वेदों की ऋचाएं,/मंत्रोच्चारण की ध्वनियां/मंत्र-मुग्ध करती,/बंसी की रागनियां

गुर्राते, गरजते, दहाड़ते बादल टुकड़ो के माध्यम से वर्तमान राजनीति पर तीखा समुचित व्यंग्य सामयिक ही लगता है.

डूबने से तो अच्छा है,/मर-मार के हाथ-पैर,/रहना सतह के ऊपर।

कवयित्री भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के दृष्टिगत ‘जन्म लेना फिर’ कविता में कुछ यूं ध्यान आकर्षित करती है.

प्रसव पीड़ा होती बराबर,/बेटी जन्म ले या बेटा।/खुशी मनाई न जाए बराबर।/जीवित रहती हैं जो बेटियां।/तिल-तिल रोज मरती,

अपने इस प्रथम काव्य संग्रह स्वर लहरियां के माध्यम से पाठकों में अपनी पहचान बनाने के उद्देश्य से इस काव्य विधा में उनकी समुचित हृदय स्पर्शी दस्तक ध्यान खिचती हैं.

कवयित्रीः श्रीमती प्रोमिला भारद्वाज
प्रकाशकः अमृत प्रकाशन
मूल्यः २००रुपये
समीक्षकः श्री रवि सांख्यान, बिलासपुर, हि.प्र.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाएं

तेरी आरजू मेरी जिन्दगी का ख्वाब है, जिसकी मंजिल जो ठीक है मगर रास्ता खराब है, हंसी से तू मेरे गम का अंदाज ना लगा, इस दिल का हर पन्ना दर्द की किताब हैं.

++

मैं तो यूंही पानी को गौर से देख रहा था...दोस्तो
इतने में इक मछली निकल कर बोली-‘कमीने तेरे घर में मां बहने नहीं है क्या...?

मो०९३३५१३८३८२

++

प्रिसींपल राउण्ड पे निकला देखा एक टीचर एक लड़की को किस कर रहा है.
प्रिसीपल-ह्वाट इज दीस?
टीचर-मारने से समझती नहीं, इसलिए प्यार से समझा रहा था.

++

सब कहते हैं दुनिया में मां-बाप से बढ़कर कोई नहीं इसलिए जल्दी से शादी कर लो और मां-बाप बन जाओ
रिश्ता वहीं, सोच नई.

जितेन्द्र सागर-८९५७१२४४६०

अखियां पानी पानी–कही मीरा, कही कबीर

'कुलं पवित्रं जननी कृतार्था/ वसुन्धरा पुण्य वती चतेन/अपार संवित सुख सागरो स्मिन/लींन पारे ब्रम्हाणयस्यचेता'
रामचरित मानस की अर्धाली में तीन मंत्र एक साथ मिलते हैं. संकेत कृपा वाणी और जन. *जापर कृपा करहिं जनुभानी कवि उर अजिर न चाबहिलानी.'* इस अर्धाली के उद्घोष की प्रामाणिकता का प्रत्यक्षीकरण हुआ. जब मैंने कवियित्री विभा कृत पुस्तक 'अखियां पानी पानी' में संकलित पदावली को पढ़ा. ज्ञान, वैराग्य, भक्ति एवं प्रेम की चतुरंगी रस धारा का कल-कल रसमय आसवाद अनिवर्चनीय आनंद. मैत्रिय भदालसा मीरा और महादेवी के अखिल भावों की विकल वंदना को इस संग्रह की पदावली में सावधानी और सजगता के साथ उतारा गया है. जिनमें कवयित्री के चित्तवृति की निरन्तर उपरामता के भाव तथा हृदय में स्फुरित भक्ति और प्रेम के आवेग के आहलादकारी रस कणों का रोमांचकारी एहसास होता है. भक्ति कालीन कवियों की ललित पद रचना का अनुगायन करती इस संग्रह की पदावली में कबीर की वाणी की विरक्त भरी व्यंजना का अनुभव होता है तो कहीं मीरा की प्रीतिपरक पीड़ा की कसक मिलती है और मिलता है सूर की रसात्मक शैली की लीला रस विभोरता की मनोरम छटा तथा कहीं कहीं 'विनय पत्रिका' की दास्य भाव की गहरी अनुभूत परक दीनता का विकल वन्दना का प्रगाढ़ समर्पण. मीरा की प्रीति तथा महादेवी की रहस्य भाव की. साझा प्रतिक्रिया से भरे निम्न पद का आनंद लीजिए.
'साथी, प्रेम की बातें बोल।/जग पर नहीं जीव पर साथी, डाल प्रेम की घोल।/प्रभु दर्शन पा जाय 'विभा' तू यहां वहां मत डोल.'
धार के विपरीत तैरना आसान काम नहीं हैं. इसके लिए अटूट साहस, दृढ़ निश्चय, कठोर परिश्रम और विनम्र लगन से भरी उत्साहित भावना की आवश्यकता होती है. निश्चित रुप से 'विभा' जी के व्यक्तित्व और संस्कारों में यह सभी कुछ था. फलस्वरुप एक 'विनय पत्रिका' की प्रतिछाया 'अखियां पानी पानी' में देखने को मिली. मीरा की अधीरता, कबीर की वीतरागता तथा सूर का पद लालित्यम विभा जी के पदों में अनायास अवतरित हुआ है. इस आशय का एक पद देखिए–
'लगें प्रभुजी सबको प्यारे।/नख शिख रुप बखानें कविवर, गुण गायें बंजारे।।/नयन-नयन में बसे जगत के श्याम-नयन कजरारे।/ फिर भी दिखें 'विभा' मायावी रस के अजब नज़ारे।।'
पदों को पढ़ने से प्रतीत होता है कि कवयित्री के चिन्तदायरे का क्षेत्रफल उपनिषदों से होता हुआ वेदों के अन्तहीन फैलाव के साथ जुड़ता है तथा लय होकर आज के संदर्भो के साथ संगत करता दिखाई देता है. भक्ति और ज्ञान, राग-वैराग्य की सगुम्फिलत भंगिमाओं की सजल पदावली में वास्तविक जीवन के यथार्थ को कबीराना अन्दाज में इस प्रकार अभिव्यक्ति दी गई है कि गीता और रामायण एक एक पांव साथ साथ चलते दिखाई देती हैं. इन तथ्यों को उज़ागर करता यह पद देखिए–
'मन रे तू भी हो जा योगी।/दे संदेश जगत को ऐसा, रहे न कोई रोगी।।/माला जपे न करे तपस्या, बने न यह जग ढोंगी।/केवल प्राणायाम करे नित, हो तेरा सहयोगी।।/चलो 'विभा' कर लो योगासन, हरदम स्वस्थ रहोगी। / मन योगी हो जाये, सत्वर प्रभु के चरण गहोगी।।'
विविध भाव रंगों से अनुलेपित पदों में इन्द्रधनुषी आभा के अनेकानेक निराकार और साकार बिम्बों की झिलमिलाहट के दृश्य पाठक के शान्त चित्त को एकान्त प्रकोष्ठों में ले जाकर वैचारिक आत्मविभोरता की सीमा तक समाधिस्थ कर देने की क्षमता रखते हैं.
प्रीति की रीति, अनुराग की लाली, विराग की विदग्धता और प्रेम की सरसता में भक्ति का तुलसी पत्र डालकर 'अंखिया पानी पानी' में पदों का जो पंचामृत घोला गया है. उसका ललित लौल्य पाठक के कण्ठ के नीचे उतर कर अनिवर्चनीय शीतलता प्रदान करता है. ज्ञान विसर्जन की ओर ले जाता है और प्रेम सृजन की ओर.

पद संग्रहः अखियां पानी पानी
कवयित्रीः विजय लक्ष्मी विभा
प्रकाशकः साहित्य सदन, भोपाल
मूल्यः १५०रुपये
समीक्षकः श्री जंगबहादुर श्रीवास्तव 'बंधु', जूनियर एच.आई.जी-४४, कटारा हिल्स, भोपाल-४३, म.प्र.

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

काव्य संग्रह

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः ५०/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११ मो० ६३३५१५५६४६

केदारखण्ड
(धर्म, संस्कृति, वास्तुशिल्प एवं पर्यटन)

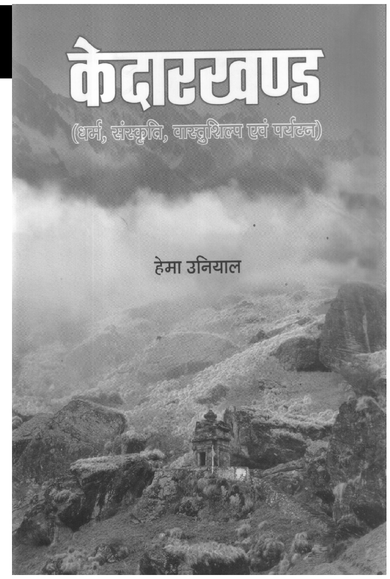

यों तो उत्तराखंड के तीन मंडलो (कुमाऊं, गढ़वाल एवं जौनसार-बाबर) की संस्कृति, भाषा, इतिहास, पुरातत्व, देवी देवता आदि विषयों पर पृथक-पृथक रूप में एवं समवेत रूप में भी अनेक ग्रन्थ प्रकाश में आ चुके हैं, पर इसके किसी पक्ष विशेष को समर्पित ग्रन्थों की संख्या अभी भी विरल ही हैं.

इसके 'केदारखण्ड' नामक ग्रन्थ की लेखिका श्रीमती हेमा उनियाल की शैक्षिक पृष्ठभूमि यद्यपि अर्थशास्त्र की रही हैं, पर इस ग्रन्थ में उन्होंने अपने अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए जिस विषय को चुना है उसका सम्बन्ध क्षेत्र विशेष के धर्म, संस्कृति, शिल्पकला एवं पर्यटन से है. पर कई बार, जैसा कि देखने में आया है कि, लगन और अभिरुचि किसी विशेष पृष्ठभूमि की मोहताज नहीं होती है. श्रीमती उनियाल ने भी अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि से हटकर जिस विषय को अपनाया है तथा उसमें जिस दक्षता का परिचय दिया है वह किसी विषय विशेषज्ञ द्वारा प्रस्तुत विवेचन से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं. उनकी इस रचना में अभिव्यक्त अनुसंधानपरक अभिरुचि, उन तथ्यों का स्वयं परीक्षण करने की लालसा, उन्हें यथोचित अभिव्यक्ति देने की क्षमता एवं विवेचन की परिपक्वता ग्रन्थ में आद्योपान्त झलकती हैं.

सर्वविदित है कि उत्तराखंड का यह गढ़वाल मंडल, जिसे प्राचीनकाल में एवं पौराणिक साहित्य में 'केदारखण्ड' या 'केदारमंडल' के नाम से जाना जाता था तथा जिसके धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का वैदिक साहित्य, महाभारत एवं पुराणों में गुणगान किया गया है, उसका लेखिका ने अपने इस ग्रन्थ में विस्तृत एवं प्रामाणिक विवरण देकर, उसे चित्रों के माध्यम से दृश्यमान रूप में प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है. क्षेत्र विशेष से सम्बद्ध जिन विवरणों का केवल कल्पनात्मक रूप में ही अनुमान लगाया जा सकता था उन्हें एक विशाल चित्रपट की भांति प्रस्तुत करके उन्होंने सम्पूर्ण केदारखण्ड को एक जीवन्त रूप में प्रस्तुत कर दिया है. उनकी इस लगन को उनके द्वारा अपने अनुसंधान दल के साथ की गयी कठिन अनुसंधान यात्राओं के रूप में देखा एवं अनुभव किया जा सकता है. कठिन एवं श्रमसाध्य पर्वतीय क्षेत्रों की पदाति यात्राएं करके क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में उसके नवीन एवं पुरातन ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व की सूचनाओं को एकत्र करना, स्थान विशेष के पर्यटन के महत्व को एवं उसके प्राकृतिक परिवेश को अपने पाठकों से रूबरू कराना किसी आरामकुर्सी पर बैठकर लिखने वाले लेखक का काम नहीं था.

लेखिका के द्वारा १० प्रभागों में विवेचित ग्रन्थ के तीन प्रभागों-लोकदेवता, वास्तुकला एवं प्रतिमा विज्ञान, जैसे विषयों के संक्षिप्त विवेचन के अतिरिक्त शेष प्रभागों में क्रमशः उत्तराखंड अथवा केदारखण्ड के सात जनपदों के संक्षिप्त रूप में भौगोलिक एवं प्रशासकीय इकाइयों पर प्रकाश डालने के साथ-साथ उनके अन्तर्गत आने वाले सभी धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों पर सचित्र विवरण एवं विवेचना प्रस्तुत किया है. इतना ही नहीं अपने इस अध्ययन में क्षेत्र विशेष के स्थानीय निवासियों से उसके विषय में प्रचलित उपाख्याओं, देविप्रतिमाओं से सम्बद्ध पूजा विधियों आदि से सम्बद्ध विवरणों को भी सम्मलित किया गया है. धार्मिक स्थलों एवं देवालयों के स्वयं खींचे गये चित्रों से सुसज्जित कर पाठकों को उनके साक्षातकार कराकर उन्हें अधिक बोधगम्य एवं आकर्षक बना डाला है.

इन देवालयों में प्रतिष्ठापित देव प्रतिमाओं, देवालयीय निर्माणपरक शिल्प/वास्तुकौशल की विशेषताओं आदि का जो विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है वह न केवल सर्वसामान्य पाठकों के लिए अपितु किसी शिल्पकौशल विशेषज्ञ, पुरातत्व एवं शिल्पकला विशारद व्यक्ति के लिए भी उपयोगी हैं. अतः कहा जा सकता है कि इन सभी दृष्टियों से लेखिका का यह प्रयास सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं. पुस्तक में यदि अध्ययन से सम्बद्ध स्थानों के निर्देशक मानचित्र को तथा विवेचित विषयों को अनुक्रमणिका को अक्षरानुक्रम से दे दिया गया होता तो पाठकों को सम्बद्ध प्रसंगों को एकत्र देखने का अवसर मिल जाता. अस्तु लेखिका इस अभूतपूर्व प्रयास के लिए निःसंदेह बधाई की पात्र हैं.

लेखिकाः हेमा उनियाल
प्रकाशकः तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
संस्करण-२०११, पृष्ठ संख्या ५४०
मूल्यः ७५०रुपये
समीक्षकः प्रो. डी.डी.शर्मा